।। ओ३म् ।।

www.aryawartkesari.com

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में प्राच्य वैदिक संस्कृति तथा भारतीयता का उद्घोषक पाक्षिक

आर.एन.आई.सं.
UPHIN/2002/7589
डाक पंजी. सं.
UPMRD Dn-64/2024-26

दयानन्दाब्दः 201
मानव सृष्टि सं. : 1960853125
सृष्टि सं.: 1972949125

ARYAWART KESARI
Amroha U.P.-244221 India

संरक्षक सहयोग : रू. 5100/- आजीवन : रू.1100/- वार्षिक शुल्क : रू.100/- (विदेश में) 5 वर्ष के लिए 35 डॉलर

वर्ष-23 अंक-13 आश्विन कृष्ण चतुर्दशी से आश्विन शुक्ल त्रयोदशी तक संवत 2081 विक्रमी 01 से 15 अक्टूबर 2024 अमरोहा (उ.प्र.) मूल्य : प्रति -5/-

महर्षि दयानन्द और मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम

आर्यावर्त केसरी समाचार

राम और कृष्ण मानवीय संस्कृति के आदर्श पुरुष हैं। कुछ बंधुओं के मन में अभी भी यह धारणा है कि महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज राम और कृष्ण को मान्यता नहीं देता है।

प्रत्येक आर्य अपनी दाहिनी भुजा ऊँची उठाकर साहसपूर्वक यह घोषणा करता है कि आर्यसमाज राम-कृष्ण को जितना जानता और मानता है, उतना संसार का कोई भी आस्तिक नहीं मानता। कुछ लोग जितना जानते हैं, उतना मानते नहीं और कुछ विवेकी-बंधु उन्हें भली प्रकार जानते भी हैं, उतना ही मानते हैं। मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान राम के संबंध में महर्षि दयानन्द ने लिखा है-

प्रश्न-रामेश्वर को रामचन्द्र ने स्थापित किया है। जो मूर्तिपूजा वेद-विरुद्ध होती तो रामचन्द्र मूर्ति स्थापना क्यों करते और वाल्मीकि जी रामायण में क्यों लिखते?

उत्तर- रामचन्द्र के समय में उस मन्दिर का नाम निशान भी न था किन्तु यह ठीक है कि दक्षिण देशस्थ ह्यरामह्ल नामक राजा ने मंदिर बनवा, का नाम ह्यरामेश्वरह्ल धर दिया है। जब रामचन्द्र सीताजी को ले हनुमान आदि के साथ लंका से चले, आकाश मार्ग में विमान पर बैठ अयोध्या को आते थे, तब सीताजी से कहा है कि-

अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः।
सेतु बंध इति विख्यातम्।।

वा0 रा0, लंका काण्ड (देखिये- युद्ध काण्ड़, सर्ग 123, श्लोक 20-21)

हे सीते! तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना-ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभु (व्यापक) देवों का देव महादेव परमात्मा है, उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यहॉ प्राप्त हुई। और देख! यह सेतु हमने बांधकर लंका में आ के, उस रावण को मार, तुझको ले आये। इसके सिवाय वहॉ वाल्मीकि ने अन्य कुछ भी नहीं लिखा।

द्रष्टव्य- सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लासः, पृष्ठ-303

इस प्रकार उक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि भगवान राम स्वयं परमात्मा के परमभक्त थे। उन्होंने ही यह सेतु बनवाया था। सेतु का परिमाप अर्थात रामसेतु की लम्बाई- चौड़ाई को लेकर भारतीय धर्मशास्त्रों में दिए गए तथ्य इस प्रकार हैं-

दस योजनम् विस्तीर्णम् शतयोजन- मायतम् -वा0रा0 22/76

अर्थात् राम-सेतु 100 योजन लम्बा और 10 योजन चौड़ा था।

शास्त्रीय साक्ष्यों के अनुसार इस विस्तृत सेतु का निर्माण शिल्प कला विशेषज्ञ विश्वकर्मा के पुत्र नल ने पौष कृष्ण दशमी से चतुर्दशी तिथि तक मात्र पॉच दिन में किया था। सेतु समुद्र का भौगोलिक विस्तार भारत स्थित धनुष्कोटि से लंका स्थित सुमेरू पर्वत तक है। महाबलशाली सेतु निमार्ताओं द्वारा विशाल शिलाओं और पर्वतों को उखाड़कर यांत्रिक वाहनों द्वारा समुद्र तट तक ले जाने का शास्त्रीय प्रमाण उपलब्ध है। भगवान श्रीराम ने प्रवर्षण गिरि (किष्किंद्या) से मार्गशीर्ष अष्टमी तिथि को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र और अभिजीत मुहूर्त में लंका विजय के लिए प्रस्थान किया था।

महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रंथों में राम, कृष्ण, शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह तथा वीर बघेलों (गुजरात) का गर्वपूर्वक उल्लेख किया है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द के राम राजपुत्र, पारिवारिक मयार्दाओं को मानने वाले, ऋषि मुनियों के भक्त, परम आस्तिक तथा विपत्तियों में भी न घबराने वाले महापुरुष थे। श्रीराम की मान्यता थी कि विपत्तियॉ वीरों पर ही आती हैं और वे उन पर विजय प्राप्त करते हैं। वीर पुरुष विपत्तियों पर विपत्तियों के समान टूट पड़ते हैं और विजयी होते हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश का यह दुर्भाग्य रहा कि पाश्चात्य शिक्षा, सभ्यता और संस्कारों से प्रभावित कुछ भारतीय नेताओं ने पोरस के हाथियों के समान भारतीय मानक, इतिहास और महापुरुषों के सम्बन्ध में विवेकहीनता धारण कर भ्रमित विचार प्रकट करने प्रारम्भ कर दिये। साम्यवादी विचारद्वारा से प्रभावित व्यक्तियों के अनुसार और ह्यस्त्री एक सम्पत्ति है, इसमें आत्मतत्व विद्यमान नहीं हैह्ल ऐसे अपरिपक्व मानसिकता वाले तत्व यदि राम के अस्तित्व और महिमा के संबंध में नकारात्मक विचार रखें, तो उनके मानसिक दिवालियापन की बात ही कही जाएगी– किन्तु भारत में जन्मे, यहॉ की माटी में लोट-पोट कर बड़े हुए तथा बार-एट लॉ की प्रतिष्ठापूर्ण उपाधिधारी जब सन्तुष्टीकरण को आद्यार बनाकर ह्यरामह्ल को मानने से ही इंकार कर दें, राम-रावण को मन के सतोगुण-तमोगुण का संघर्ष कहने लग जाएं तो हम किसे दोषी या अपराधी कहेंगे?

अपनी समाधि पर ह्यहे राम!ह्ल लिखवाने वाले विश्ववंद्य गांधीजी ने राम के संबंध में ह्यहरिजनह्ल के अंकों में लेख लिख कर कैसे विचार प्रकट किये, यह तो ह्यहरिजनह्ल के पाठक ही जान सकते हैं। इस स्वतन्त्र राष्ट्रमें अपने आप्त महापुरुषों के अस्तित्त्व पर नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वालों की बुद्धि पर दया ही आती है और कहना पड़ता है- धियो यो नः प्रचोदयात।

महर्षि दयानन्द ने राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र राम के पौरुष तथा उनके गुणों का विचारणीय एवं महत्वपूर्ण वर्णन किया है। महर्षि दयानन्द ने राम को महामानव, ज्येष्ठ-श्रेष्ठ आत्मा, परमात्मा का परम भक्त, धीर-वीर पुरुष, विजय के पश्चात भी विनम्रता आदि गुणों से विभूषित बताया है। महर्षि दयानन्द का राम एक ऐसा महानायक था, जिसने सद्गृहस्थ रहते हुए तपस्या द्वारा मोक्ष के मार्ग को अपनाया था।

राम और कृष्ण; दोनों ही सद्गृहस्थ तथा आदर्श महापुरुष थे। आज राष्ट्र को ऐसे ही आदर्श महापुरुषों की आवश्यकता है, जिनके आदर्श को आचरण में लाकर हम अपने राष्ट्रज्ञ की स्वतन्त्रता, अखण्डता, सार्व भौमिकता तथा स्वायत्तता की रक्षा कर सकते हैं।

सम्पादकीय

ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज को है महाभारत के बाद विश्व में वेदों के प्रचार का श्रेय

पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के बाद वेदों का सत्यस्वरूप विस्मृत हो गया था। वेदों के विलुप्त होने के कारण ही संसार में मिथ्या अन्धविश्वास, पक्षपात व दोषपूर्ण सामाजिक व्यवस्थायें फैली हैं। इससे विद्या व ज्ञान में न्यूनता तथा अविद्या व अज्ञानयुक्त मान्यताओं में वृद्धि हुई है। आश्चर्य होता है कि सत्य ज्ञान की खोज की प्रेरणा व उसके प्रचार का कार्य ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त किसी मनुष्य को न सूझा न उसने किया। किया भी तो वह सत्यज्ञान वेदों तक नहीं पहुंच सका और उससे मानवता का जो भला हो सकता था वह न हो सका। लोग अविद्यायुक्त मत-मतान्तरों, अज्ञानयुक्त मान्यताओं व परम्पराओं का ही पोषण करते रहे। यह सब मत-मतान्तर ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज द्वारा ईश्वर से सृष्टि के आरम्भ में प्राप्त सत्य वेदज्ञान के प्रचार का विरोध करते रहे वा उसकी उपेक्षा करते रहे। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से सम्पूर्णतया सत्य है तथा सृष्टि के सभी रहस्यों से युक्त है। वेदों का ज्ञान ही मनुष्य की निजी व सामाजिक उन्नति का कारण है। इस तथ्य व सिद्धान्त की भी विश्वस्तर पर उपेक्षा ही देखने को मिलती है। वर्तमान समय में भी प्रचलित मत-मतान्तर अविद्या से युक्त वेदविरुद्ध विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों तथा परम्पराओं को ही मानकर उनके अनुरूप व्यवहार कर रहे हैं। इसी कारण से संसार में अनेक प्रकार के संघर्ष व अशान्ति देखने को मिलती है। संसार में सब मनुष्यों का ईश्वर एक है तथा सब मनुष्य एक ईश्वर द्वारा उत्पन्न होने से उसी की सन्तानें हैं। सब मनुष्य परस्पर बहिन व भाई के सम्बन्ध से बन्धें हुए हैं। इस वसुधैव कुटुम्बकम् का व्यवहारिक स्वरूप विश्व में कहीं देखने को नहीं मिलता। ऐसी बातें वेद व वैदिक साहित्य में ही उपलब्ध हैं जिसका प्रचार करता हुआ कोई मनुष्य व संगठन दृष्टिगोचर नहीं होता। आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि विश्व में वेदों का प्रचार संगठित व प्रभावशाली रूप से हो जिससे लोग अपने आत्मस्वरूप से परिचित होकर अपनी आत्मा की उन्नति कर दुःखों से मुक्त हो सकें। इसके साथ ही सब लोग परस्पर एक परिवार के समान सत्य व प्रेम से युक्त होकर परोपकार एव सहयोग का व्यवहार करें। ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानकर उसे ही मानें व ईश्वर की उपासना से अपनी आत्मा के ज्ञान व सामर्थ्य को बढ़ाकर सुख व शान्ति का जीवन व्यतीत करें। वेद और आर्यसमाज सहित ईश्वर भी इसी कार्य को करने की प्रेरणा अपने सच्चे भक्तों व उपासकों को देते हैं। ईश्वर की भावना व प्रेरणा को जानना सब मनुष्यों का कर्तव्य है। इसे जानकर व व्यवहार में लाकर ही हम सभी समस्याओं का निदान कर सकते हैं।

महाभारत युद्ध के बाद वेदानुयायियों के आलस्य व प्रमाद के कारण वेदों का ज्ञान विलुप्त होकर विकृतियों को प्राप्त हुआ। देश में सच्चे धार्मिक संगठनों के अभाव व लोगों की सत्यधर्म की खोज में प्रवृत्ति न होने के कारण समाज मिथ्या विश्वासों से ग्रस्त रहा और उसमें सत्यज्ञान वेद के विरुद्ध आडम्बरों व पाखण्डों की वृद्धि ही देखने को मिलती है। सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान तथा सृष्टिकर्ता ईश्वर की मूर्ति की पूजा का विचार भी महात्मा बुद्ध के अनुयायियों ने प्रवृत्त किया। सत्य की कसौटी पर यदि मूर्तिपूजा को कसा जाये तो सर्वव्यापक व निराकार ईश्वर की मूर्ति बन ही नहीं सकती। यह एक कल्पना मात्र है। इसे आस्था भी कहा जाता है परन्तु आस्था यदि सत्य हो तभी उसके इच्छित परिणाम प्राप्त होते हैं अन्यथा शोक व दुःख के अतिरिक्त कुछ प्राप्त नहीं होता। मूर्तिपूजा में आस्था होने पर भी हमारे सोमनाथ, काशी, मथुरा, अयोध्या आदि हजारों मन्दिरों को तोड़ा गया और हम देखते रह गये। हम संघर्ष कर मृत्यु व गुलाम बनने के लिये विवश रहे परन्तु इन देवमूर्तियों ने हमारी रक्षा नहीं की। हमारे इस प्रकार के अनेक धार्मिक अन्धविश्वास ही देश व समाज के पतन के कारण सिद्ध हुए जिसमें देश का असंगठन व परतन्त्रता का कारण भी धार्मिक व सामाजिक मान्यताओं में वैदिक सत्य ज्ञान व वैदिक सत्य व्यवहारों का समावेश न होना था।

ऋषि दयानन्द ने अपनी बाल्यावस्था में ही अज्ञान व अन्धविश्वासों पर विश्वास न कर सत्य को जानने का प्रयत्न किया। मूर्तिपूजा की वास्तविकता को जानने के लिये उन्होंने अपने पिता व विद्वानों से प्रश्न किये थे परन्तु कोई उनकी सन्तुष्टि नहीं कर सका था। इसी कारण उन्होंने अपने पितृ गृह को त्याग कर ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानने व प्राप्त करने का प्रयत्न किया था। इसी प्रयत्न में ही वह एक सच्चे समाधि सिद्ध योगी बनने के साथ वेद और वेदांगों के अपूर्व विद्वान बने। उन्होंने वेदों को प्राप्त कर उनके सत्यासत्य की परीक्षा कर अपने गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा के अनुसार तर्क व युक्तिसंगत सत्य वैदिक मान्यताओं का देश व समाज में प्रचार किया। वह सभी मत व पन्थों के विद्वानों को किसी भी धर्म व समाज हित से जुड़े विषय पर चर्चा व शास्त्रार्थ करने की चुनौती देते थे और अपने प्रवचनों में धर्म व आचरण विषयक सभी परम्पराओं की तर्कपूर्ण विवेचना कर सत्य का स्वरूप प्रस्तुत करते थे जिससे सामान्यजनों सहित मत-मतान्तरों के विद्वान भी उनके विचारों, मान्यताओं व तर्कों से सहमत होते थे। ऋषि दयानन्द ने देश भर में घूम कर वैदिक मान्यताओं का मौखिक उपदेशों द्वारा प्रचार करने के साथ वेदों का सत्य स्वरूप समाज में उपस्थित किया। किसी पूर्ववर्ती मत व सम्प्रदाय के विद्वान में उनकी मान्यताओं को असत्य बताने व सिद्ध करने का सामर्थ्य नहीं था। काशी में 16 नवम्बर, 1869 को सनातन पण्डितों से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ में भी जड़ मूर्तिपूजा को वेदानुकूल तथा तर्क से सिद्ध नहीं किया जा सका।

-अतिथि सम्पाादकीय : मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानंद के दलितोंउद्धार के कार्य

आर्यावर्त केसरी समाचार

वर्णव्यवस्था जन्मना है या कर्मणा।यदि उसे जन्मना माना जाय तो वह जातिगत भेदभाव को निर्माण करने का एक महत्तवपूर्ण कारण सिद्ध होती है।ऋषि दयानन्द कर्मणा वर्णव्यवस्था के पक्षधर हैं।उनकी यह धारणा थी कि जन्मना वर्णव्यवस्था तो पांच-सात पीढ़ियों से शुरू हुई है,अतः उसे पुरातन या सनातन नहीं कहा जा सकता।अपने तार्किक प्रमाणों द्वारा उन्होंने जन्मना वर्णव्यवस्था का सशक्त खंड़न किया है।उनकी दृष्टि में जन्म से सब मनुष्य समान हैं, जो जैसे कर्तव्य-कर्म करता है,वह वैसे वर्ण का अधिकारी होता है।

अस्पृश्य अछूत-दलित शब्द का विवेचन प्रस्तुत करते हुए डा. कुशलदेव शास्त्री लिखते हैं कि दलितोद्धार से पूर्व दलितों के लिए सार्वजनकि सामाजिक क्षेत्र में अस्पृश्य और अछूत शब्द प्रचलित थे,लेकिन जब समाज-सुधार के बाद समाज में यह धारणा बनने लगी कि कोई भी अस्पृश्य और अछूत नहीं है,तो धीरे-धीरे अस्पृश्य के स्थान पर दलित शब्द रुढ़ हो गया। स्वाभाविक रूप से अस्पृश्योद्धार वा अछूतोद्धार का स्थान भी दलितोद्धार ने ले लिया।मानसिक परिवर्तन ने पारिभाषिक संज्ञाओं को भी परिवर्तित कर दिया।

प्रदीर्घ समय तक सामाजिक,आर्थिक आदि दृष्टि से जिनका दलन किया गया,कालान्तर में उन्हें ही दलित कहा गया।पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति के अनुसार जब यह महसूस किया जाने लगा कि शुद्धि और दलितोद्धार दोनों चीजें एक सी नहीं हैं।दलितों की हीन दशा के लिए सवर्ण समझे जानेवाले लोग ही जिम्मेदार हैं,जिन्होंने जाति के करोड़ों व्यक्तियों को अछूत बना रखा है।उन्हें मानवता का अधिकार देना सवर्णों का कर्तव्य है।इस विचार को सामने रखकर आर्य समाज के कार्यकताओं ने अछूतों के लिए दलित और अछूतों के उद्धार कार्य के लिए दलितोद्धार की संज्ञा दे दी।तभी से अछूतों की शुद्धि के संदर्भ में दलितोद्धार संज्ञा प्रचलित हो गयी।

यह बात अविस्मरणीय है कि आर्य समाज के समाज सुधार आंदोलन ने ही दलित-आन्दोलन को दलित और दलितोद्धार जैसे सक्षम शब्द प्रदान किये हैं।

महर्षि दयानन्द अपने ही नही सबके मोक्ष की चिंता करनेवाले थे।किसी जाति-सम्प्रदाय वर्ग विशेष के लिए नहीं,अपितु सारे संसार के उपकार के लिए उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की थी।

सन् 1880 में काशी में एक दिन एक मनुष्य ने वर्ण व्यवस्था को जन्मगत सिद्ध करने के उद्देश्य से महाभाष्य का निम्न श्लोक प्रस्तुत कियाः-

विद्या तपश्च योनिश्च एतद् ब्राह्मण कारकम्।
विद्या तपोभ्यां यो हीनो
जाति ब्राह्मण एव सः।।
4/1/48।।

अर्थात् ब्राह्मणत्व के तीन कारक हैं -1) विद्या, 2) तप और 3) योनि।जो विद्या और तप से हीन है वह जात्या (जन्मना) ब्राह्मण तो है ही।

ऋषि दयानन्द ने प्रतिखंडन में मनु का यह श्लोक प्रस्तुत किया-

यथा काष्ठमयो हस्ती,
यश्चा चर्ममयो मृगः।
यश्च
विप्रोऽनधीयानस्त्रयस्ते नाम
बिभ्रति।। मनु०(2,157)

अर्थात जैसे काष्ठ का कटपुतला हाथी और चमड़े का बनाया मृग होता है,वैसे ही बिना पढ़ा हुआ ब्राह्मण होता है।उक्त हाथी,मृग और विप्र ये तीनों नाममात्र धारण करते हैं

ऋषि दयानन्द से पूर्व और विशेष रूप से मध्यकाल से ब्राह्मणों के अतिरिक्त सभी वर्णस्थ व्यक्तियों को शूद्र समझा गया था,अतः क्रमशः मुगल और आंग्ल काल में महाराष्ट्र केसरी छत्रपति शिवाजी महाराज,बड़ौदा नरेश सयाजीराव गायकवाड और कोल्हापुर नरेश राजर्षि शाहू महाराज को उपनयन आदि वेदोक्त संस्कार कराने हेतु आनाकानी करनेवाले ब्राह्मणों के कारण मानसिक यातनाओं के बीहड़ जंगल से गुजरना पड़ा था।

ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः अर्थात ज्ञानी हुए बिना इन्सान की मुक्ति संभव नहीं है।अतः ऋषि दयानन्द का दलितोद्धार की दृष्टि से भी सब से महान कार्य यह था कि उन्होंने सबके साथ दलितों के लिए भी वेद-विद्या के दरवाजे खोल दिए।मध्यकाल मे स्त्री-शूद्रों के वेदाध्ययन पर जो प्रतिबंध लगाये गए थे,आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने मेधावी क्रांतिकारी चिंतन और व्यक्तित्व से उन सब प्रतिबंधों को अवैदिक सिद्ध कर दिया।ऋषि दयानन्द के दलितोद्धार के इस प्रधान साधन और उपाय में ही उनके द्वारा अपनाये गए अन्य सभी उपायों का समावेश हो जाता है,जैसे-

1) दलित स्त्री-शूद्रों को गायत्री मंत्र का उपदेश देना। 2) उनका उपनयन संस्कार करना। 3) उन्हें होम-हवन करने का अधिकार प्रदान करना। 4) उनके साथ सहभोज करना। 5) शैक्षिक संस्थाओं में शिक्षा वस्त्र और खान पान हेतु उन्हें समान अधिकार प्रदान करना। 6) गृहस्थ जीवन में पदार्पण हेतु युवक-युवतियों के अनुसार (अंतरजातीय) विवाह करने की प्रेरणा देना आदि।

डा. आंबेडकर ने भी स्वीकार किया है कि-स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वर्णव्यवस्था बुद्धि गम्य और निरूपद्रवी है।

डा. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के उपकुलपति,महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध वक्ता प्राचार्य शिवाजीराव भोसले जी ने अपने एक लेख में लिखा है, राजपथ से सुदूर दुर्गम गांव में दलित पुत्र को गोदी में बिठाकर सामने बैठी हुई सुकन्या को गायत्री मंत्र पढ़ाता हुआ एकाध नागरिक आपको दिखाई देगा तो समझ लेना वह ऋषि दयानन्द प्रणीत का अनुयायी होगा।

आर्यसमाजी न होते हुए भी ऋषि दयानन्द की जीवनी के अध्ययन और अनुसंधान में 15 से भी अधिक वर्ष समर्पित करने वाले बंगाली बाबू देवेंद्रनाथ ने दयानन्द की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए लिखा है,वेदों के अनधिकार के प्रश्न ने तो स्त्री जाति और शूद्रों को सदा के लिए विद्या से वंचित किया था और इसी ने धर्म के महंतों और ठेकेदारों की गद्दियां स्थापित की थीं,जिन्होंने जनता के मस्तिष्क पर ताले लगाकर देश को रसातल में पहुंचा दिया था। दयानन्द तो आया ही इसलिए था कि वह इन तालों को तोड़कर मनुष्यों को मानसिक दासता से छुड़ाए। ऋषि दयानन्द के काशी शास्त्रार्थ में उपस्थित पं. सत्यव्रत सामश्रमी ने भी स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हुए लिखा है,शूद्रस्य वेदाधिकारे साक्षात वेदवचनमपि प्रदर्शितं स्वामि दयानन्देन यथेमां वाचं इति।

डा. चन्द्रभानु सोनवणे ने लिखा है,मध्यकाल में पौराणिकों ने वेदाध्ययन का अधिकार ब्राह्मण पुरुष तक ही सीमित कर दिया था,स्वामी दयानन्द ने यजुर्वेद के (26/2) मंत्र के आधार पर मानवमात्र को वेद की कल्याणी वाणी का अधिकार सिद्ध कर दिया।स्वामीजी इस यजुर्वेद मंत्र के सत्यार्थद्रष्टा ऋषि हैं।

ऋषि दयानन्द के बलिदान के ठीक 10 वर्ष बाद उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए दादा साहेब खापर्डे ने लिखा था,स्वामीजी ने मंदिरों में दबा छिपाकर रखे गए वेद भंडार समस्त मानव मात्र के लिए खुले कर दिये।उन्होंने हिंदू धर्म के वृक्ष को महद् योग्यता से कलम करके उसे और भी अधिक फलदायक बनाया।

वेदभाष्य पद्धित को दयानन्द सरस्वती की देन नामक शोध प्रबंध के लेखक डा. सुधीर कुमार गुप्त के अनुसार स्वामी जी ने अपने वेदभाष्य का हिंदी अनुवाद करवाकर वेदज्ञान को सार्वजनिक संपत्ति बना दिया। पं. चमूपति जी के शब्दों में दयानन्द की दृष्टि में कोई अछूत न था। उनकी दयाबल-बली भुजाओं ने उन्हें अस्पृश्यता की गहरी गुहा से उठाया और आर्यत्व के पुण्यशिखर पर बैठाया था।

हिंदी के सुप्रसिद्ध छायावादी महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने लिखा है देश में महिलाओं,पतितों तथा जाति-पांति के भेदभाव को मिटाने के लिए महर्षि दयानन्द तथा आर्यससमाज से बढ़कर इस नवीन विचारों के युग में किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया। आज जो जागरण भारत में दीख पड़ता है, उसका प्रायः सम्पूर्ण श्रेय आर्य समाज को है।

महाराष्ट्र राज्य संस्कृति संवर्धन मंडल के अध्यक्ष मराठी विश्वकोश निमार्ता तर्क-तीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी ऋषि दयानन्द की महत्ता लिखते हुए कहते हैं, सैकड़ों वर्षों से हिंदुत्व के दुर्बल होने के कारण भारत बारंबार पराधीन हुआ।इसका प्रत्यक्ष अनुभव महर्षि स्वामी दयानन्द ने किया।इसलिए उन्होंने जन्मना जातिभेद और मूर्तिपूजा जैसी हानिकारक रुढ़ियों का निर्मूलन करनेवाले विश्वव्यापी महत्वाकांक्षा युक्त आर्यधर्म का उपदेश किया। इस श्रेणी के दयानन्द यदि हजार वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए होते,तो इस देश को पराधीनता के दिन न देखने पड़ते।इतना ही नहीं,प्रत्युत विश्व के एक महान राष्ट्र के रूप में भारतवर्ष देदीप्यमान होता।

रमेश आर्य यादव

वेद वाणी

मरुत (प्राण की साधना वाले, अर्यमा (दान भावना वाले)

मित्रा (मित्र के मार्ग पर चलकर) मित्र की भावना वाले होकर मै प्रभु का वत्स बनूँ, प्रभु का प्रिय बनूँ!

(सुनीथो घा स मतर्यो यं मरुतो यमर्यमा! मित्रास्पान्त्यद्रुहः!) साम २०६-३

व्याख्या इस मन्त्र का ऋषि वत्स है - जो अपने जीवन से वेद वाणी को कहता है (वदति इति) अर्थात जिसकी क्रियाएँ वेदानुकूल है, अतः वह प्रभु का वत्स - प्रिय है!

वह वत्स कहता है कि घ सःमतर्यःसच नीथः निश्चय से वह मनुष्य उत्तम नयन (मार्ग) से चलने वाला है!

१- यम् मरुतः पान्ति जिसे प्राण रक्षित करते हैं! अर्थात प्राणायाम द्वारा प्राणों की साधना करके जो अपने को रोगों और वासनाओं से बचाता है- वह मनुष्य सुनीथ है!

२- यम् अर्यमा जिसे दान की भावना सुरक्षित करती है! दान की भावना से मनुष्य व्यसनों से बचकर अपने जीवन को शुद्ध बना पाता है

३- यम् मित्राः जिसे स्नेह का देवता रक्षित करता है!

प्राणी मात्र के प्रति स्नेह की भावनावाला होने के कारण यह व्यक्ति राग- द्वेष से ऊपर उठता है!

प्राणों की साधना, देने की वृत्ति और स्नेह की भावना ये तीनों ही मनुष्य को गिरने नहीं देती, दूसरे शब्दों में ये तीनो मिलकर

जीवन का मार्ग है! इन वृत्तियों को अपनाने वाला व्यक्ति अद्रुहः कभी हिंसित नहीं होता! हिंसित क्यो हो? यह तो प्रभु का प्यारा वत्स है! *मन्त्र का भाव है कि- हम प्राणायाम साधना, दान की वृत्ति और मित्रता के मार्ग पर चलकर

प्रभु के उपासक बनें*

सुप्रभात सुमन भल्ला

आर्य समाज से ही होगा विश्व कल्याण : देवेंद्र पाल वर्मा

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

मुरादाबाद। आर्य समाज, रेलवे हरथला कॉलोनी में आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेंद्र पाल वर्मा ने कहा कि आर्य समाज से ही संपूर्ण विश्व का कल्याण हो सकता है।

74 वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर अपने उद्बोधन में सभा प्रधान श्री वर्मा ने कहा कि आर्य समाज एक ऐसा जन आंदोलन है, जिसने भारत ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व को एक नई दिशा दी है। आर्य समाज ने कुरीतियों का पुरजोर विरोध करते हुए सत्य सनातन वैदिक धर्म का मार्ग प्रशस्त किया।

सभा प्रधान ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज के आंदोलनकारी स्वरूप से ही राष्ट्र रक्षा संभव है। उन्होंने आर्य समाज की मान्यताओं पर बोलते हुए कहा कि आर्य समाज की शरण में आने से ही वास्तविक कल्याण हो सकता है।

इस अवसर पर वैदिक विधि विधान से राष्ट्र कल्याण यज्ञ भी संपन्न हुआ। श्रद्धालु नर नारियों तथा बच्चों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। इस अवसर पर आर्य समाज हरथला कॉलोनी के पदाधिकारी व सभासदों के साथ ही क्षेत्र के लोगों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

वृक्षारोपण व यज्ञ के साथ हुआ सच्चा श्राद्ध कार्यक्रम

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

गाजियाबाद। आर्य समाज इंद्रापुरम ने 29 सितंबर को सच्चा श्राद्ध नाम से कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया।

इस अवसर पर गुरुकुल चोटीपुरा की ब्रह्मचारिणी हिमानी आर्या ने बहुत ही सुंदर ढंग से यज्ञ करवाया, उसके बाद आचार्य अवनीश शास्त्री ने श्राद्ध की बहुत सुंदर व विशद व्याख्या की। उन्होंने कहा कि अपने माता पिता की जीते जी सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध है। मरने के उपरांत माता पिता के अधूरे कार्यों को पूरा करना ही श्राद्ध है। अगर खिलाना ही है तो अपने कार्य करने वाले मेड, नौकर, ड्राईवर, कार सफाई वाला, गार्ड आदि को खिलाओ। कौआ की चोंच में जबरदस्ती खाना रखने से कुछ नहीं होगा।

इस अवसर पर मुख्य यजमान श्रीमान अजय वालिया जी एवम श्रीमती रिचा वालिया , श्री टी.पी. शर्मा एवं श्रीमती कमलेश शर्मा तथा श्रीमती शशि प्रभा आर्या रही।

प्रधान प्रदीप आर्य ने अपने संबोधन में कहा कि अपने माता पिता की जीते जी सेवा करना ही

सच्चा श्राद्ध है। उन्होंने एक छोटा भजन "अब तक पल पल याद आते है , तेरे वो अहसान मां", गाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

श्री विनोद त्यागी ने बताया कि पक्षियों को दाना डालना, गाय को रोटी खिलाना, गरीब छात्रों की फीस कम करना, ये कार्य वे सदैव करते रहते हैं, उनको इसमें बहुत खुशी मिलती है। आर्य यज्ञवीर चौहान ने बताया कि श्राद्ध तर्पण का सही मतलब माता पिता के प्रति श्रद्धा रखना है तथा उनकी आज्ञा मानना ही श्राद्ध है। आर्य रविंद्र चौहान ने एक भजन "रचा है श्रृष्टि को जिस प्रभु ने, वो ही ये श्रृष्टि चला रहे हैं" सुनाकर सबको आत्म विभोर कर दिया। कार्यक्रम में श्रीमती रिचा वालिया ने कि वाट्सअप ने लोगो को बहुत गुमराह किया है, राखी इस समय बांधनी है, पहले बांधली तो अनिष्ठ हो जायेगा, बिना सिर पैर की बाते ये ढोंगी करते रहते हैं, इनसे बचना चाहिए।

उन्होंने कहा कि यदि इनसे बचना है, तो आर्य समाज में आना होगा। आर्य समाज में आने से सारे पाखंड दूर हो जाते है।

इस अवसर पर आर्य समाज इंदिरापुरम के मंत्री श्री दिग्विजय सिंह आर्य (मो. 9811762735) ने कहा कि बच्चो को संस्कारवान बनाओ। गुरुकुल में पढ़ाओ। आपको बुढ़ापे में अनाथ आश्रम नहीं जाना होगा । आपके बच्चे सच्चा श्राद्ध करेंगे जिंदा पर सेवा करेंगे।

अनुश्री खरबंदा ने भी एक भजन "सुख बरसे आंगन आंगन" गाकर सभी को खुश कर दिया।

कार्यक्रम की बेला में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से प्रेरणा लेकर एक पेड़ मां के नाम से आर्य समाज के बाहर दयानंद वाटिका में 15 लोगो ने अपने अपने माता पिता तथा प्रिय जनों के नाम से एक एक पेड़ भी लगाये।

घर-घर यज्ञ के आह्वान के साथ पर्यावरण संरक्षण पर दिया बल

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

अमरोहा। आगामी नवरात्रों में सभी आर्य बंधु अपने घरों में प्रतिदिन यज्ञ करें, जिससे संचारी रोगों का नियंत्रण तथा प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति उनका योगदान हो सके। ये विचार निकटवर्ती ग्राम सिहाली गोसाईं में श्री तारा चंद आर्य के यहां आयोजित जिला स्तरीय आर्य सम्मेलन एवं यज्ञ में जिला मंत्री श्री विनय त्यागी द्वारा व्यक्त किए गए।

इस अवसर पर ग्यारह नव युवक एवम युवतियों को यज्ञोपवीत धारण कराते हुए ब्रह्मसूत्र का महत्व और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करते हुए श्री भीष्म आर्य द्वारा शरीर एवम् मन को स्वस्थ रखने तथा खान पान की शुद्धि का बोध कराया गया।

सम्मेलन में भजनोपदेशिका श्रीमती आशा आर्या एवम महाशय श्री जगमाल आर्य द्वारा सुंदर भजन प्रस्तुत किए गए। यज्ञ दान तथा कर्म की सुंदर व्याख्या श्री तारा चंद द्वारा की गई। श्री हेतराम सागर द्वारा महर्षि दयानंद के समय , संघर्ष तथा मार्गदर्शन पर प्रकाश डालते हुए 200वी जयंती पर आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में आचार्य सोमेश शास्त्री द्वारा ईश्वर के स्वरूप का विवेचन किया गया।

सभा प्रधान श्री धर्मवीर आर्य द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया विशेषकर महिलाओं की सहभागिताक का। पूर्व काल में वर्ण व्यवस्था कर्म से थी जन्म से नहीं, सभी लोग अपने को आर्य कहें तथा धर्म सनातन वैदिक बताएं।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य मेनपाल ने वैदिक विधि विधान से राष्ट्र कल्याण यज्ञ संपन्न कराया।

कार्यक्रम में श्री नौबत सिंह, जगत सिंह, सुभाष दुआ, हरी सिंह, नवनीत सिंह, सुखवीर सिंह, रामपाल सिंह तथा जगवीर सिंह आदि ने भाग लिया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

दशहरा को "वीर पर्व" के रूप में मनाए-राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

अमरोहा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक ऑनलाइन संपन्न हुई क बैठक में सभी शाखाओं में दशहरा पर्व को "वीर पर्व " के रूप में आयोजित करने का निश्चय हुआ क परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने सभी प्रांतों, जिला व शाखा स्तर पर दशहरा के अवकाश में वीर पर्व मनाने का आह्वान किया कसभी स्थानों पर सामुहिक एकत्रीकरण, खेल कूद प्रतियोगिताएं, भाषण, संगीत व शस्त्र पूजन के कार्यक्रम आयोजित करे कयह पर्व बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है और हिंदू समाज इसे उत्साहपूर्ण मनाता भी है सभी को जात पात, प्रांत वाद से ऊपर उठकर हिंदू

समाज को संगठित व जागरूक करने का कार्य करना चाहिए। राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र भाई ने भी इस अभियान को सफल बनाने का आह्वान किया क परिषद के उत्तर प्रदेश प्रान्तीय अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि हम पूरे प्रदेश में कई कार्यक्रम आयोजित करेंगे। राष्ट्रीय मंत्री देवेन्द्र भगत ने बताया कि आगामी 10 नवम्बर को 141 वा महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान दिवस आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार दिल्ली में मनाया जाएगा। प्रमुख रूप से धर्मपाल आर्य, दुर्गेश आर्य, सुधीर बंसल, कुसुम भंडारी, सुरेश आर्य, सौरभ गुप्ता, अरुण आर्य, वीरेंद्र आहूजा,आस्था आर्य आदि ने अपने विचार रखे और अभियान को सफल बनाने का निश्चय किया।

सारा विश्व हमारा परिवार है : आचार्य संजीव रूप

साप्ताहिक सत्संग

आयावर्त केसरी ब्यूरो

बिल्सी। तहसील क्षेत्र के यज्ञ तीर्थ गुधनी में स्थित आर्य समाज का साप्ताहिक सत्संग प्रज्ञा यज्ञ मंदिर में किया गया ! सभी ने मिलकर विश्व शांति की कामना प्रभु से की और आहुतियां दीं । इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध विद्वान आचार्य संजीव रूप ने कहा "जब तक हमारी सोच संकीर्ण रहेगी तब तक हम सुखी नहीं हो सकते ! हम अपने परिवार के कुछ सदस्यों को ही अपना परिवार मानते हैं जिस दिन हम विश्व भर के लोगों को अपना परिवार मान लेंगे उस दिन हमारा जीवन खुशियों से भर जाएगा ! हम अपने बच्चों को ही अपना ना मानें, संसार भर के बच्चों को अपना बच्चा माने ! और जैसे अपने प्राणों से हम प्यार करते हैं वैसे ही सब प्राणियों से प्यार करें ! हिंसा का त्याग करने वाले के प्रति संसार के सब जीव बैर त्याग देते हैं ! उन्होंने कहा कि छोटी-छोटी महत्वाकांक्षाएं व्यक्ति को बड़े दुख देती हैं ! धरती पर हाहाकार मच जाता है । खून चाहे हिंदू या मुसलमान का वहे दो देशों के लोगों का वहे लेकिन शर्मसार तो मानवता होती है ! इसलिएहम पूरी पृथ्वी के लोगों को प्रेम,सत्य और अहिंसा केमार्ग पर चलकर के एक दूसरे के लिए समर्पित होना होगा तभी विश्व शांति की स्थापना होगी ! तृप्ति शास्त्री ने सुंदर भजन गाया

वह सबके दिल में रहता है दिल में ही पाओगे यदि बाहर जाओगे तो धोखा खाओगे !

कुमारी मोना, कुमारी कौशिकी ने वेद पाठ किया ! इस अवसर पर वैद्य राकेश आर्य , श्रीमती सरोजा देवी,श्रीमती गुड्डो देवी , श्रीमती कमलेश रानी श्रीमती रेखा रानी, नीरेश कुमार, राकेश आर्य आदि मौजूद रहे

विधि विधान से किया यज्ञ

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

हिसार। महाशय दल्लुराम आर्य व उनके तत्कालीन सहयोगियों द्वारा सन् 1934 में संस्थापित आर्य समाज आर्यनगर, जिला- हिसार (हरियाणा) में वर्ष 2024 के 39 वें रविवार को उनकी चोथी, पांचवी व छटी पीढ़ियां के साथ पुरोहित श्री निलेश व परीक्षित आर्य ने विधिवत ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ व बलिवैश्वदेव यज्ञ सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर यज्ञमान के आसन पर आयु० दीक्षा आर्या ने सब जनों के साथ यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। सबने मिल कर यज्ञ प्रार्थना, आर्य समाज के दस नियमों का पाठ व दो गीत १) "ओं जपो मेरे भाई.....। व २) "मेरे दाता के दरबार में सब लोगों का.....।" गाए। कार्यक्रम में श्री सीताराम आर्य ने सेवा, सफाई, अनुशासन के साथ भारत के संविधान के बारे में सरल व संक्षिप्त उपदेश किया । श्री धर्मसिंह आर्य ने बच्चों को आशीर्वाद दिया। समापन पर सबने यज्ञ शेष का आनंद लिया ।

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा
(आर्ष वैदिक साहित्य एवं राष्ट्र चेतना संबंध साहित्य के प्रकाशक)

प्रकाशित पुस्तकों की सूची:

अर्चना यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 20
आर्य पर्व पद्धति ..... मूल्य रू. 25
यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 35
आर्य समाज बुला रहा है ..... मूल्य रू. 6
कर्मफल रहस्य ..... मूल्य रू. 10
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की विचारधारा ..... मूल्य रू. 5
सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़े ..... मूल्य रू. 2
महर्षि दयानंद के जीवन के विविध प्रसंग मूल्य रू. 20
नीति शतक भाग-1, भाग-2----------(प्रत्येक का मूल्य रू. 20)
वैदिक सिद्धांत विमर्श ..... मूल्य रू. 25
भजन माला ..... मूल्य रू. 20
आर्योद्देश्यरत्नमाला ..... मूल्य रू. 8
महर्षि दयानंद की विशेषताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
अंत्येष्टि संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 8
आर्य कन्या की सूझबूझ ..... मूल्य रू. 8
दयानंद लघु ग्रंथ संग्रह ..... मूल्य रू. 60
संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 80
दयानंद सुविचार धन ..... मूल्य रू. 70
कथा सरोवर ..... मूल्य रू. 50
मानव कल्याण निधि ..... मूल्य रू. 100
सत्यार्थ प्रकाश बिना जिल्द (छोटा) मूल्य रू. 80
सत्यार्थ प्रकाश सजिल्द (बड़ा) .. मूल्य रू. 250
प्रखर राष्ट्रचेता महर्षि दयानंद ....प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विरजानंद
प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी श्रद्धानंद ..प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी दर्शनानंद
प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा हंसराज ..प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा लेखराम
प्रखर राष्ट्रचेता गुरुदत्त विद्यार्थी .प्रखर राष्ट्रचेता लाला लाजपत राय
प्रखर राष्ट्रचेता पं. रामप्रसाद बिस्मिल .प्रखर राष्ट्रचेता सरदार भगत सिंह
प्रखर राष्ट्रचेता डॉक्टर हेडगेवार .प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विवेकानंद
प्रखर राष्ट्रचेता सरदार पटेल ....प्रखर राष्ट्रचेता प्रकाशवीर शास्त्री
प्रखर राष्ट्रचेता डॉ. भीमराव अंबेडकर
प्रखर राष्ट्रचेता पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी प्रखर राष्ट्रचेता पं. दीनदयाल उपाध्याय
(ऐसे ही अन्य अनेक महापुरुषों के संक्षिप्त जीवन चरित्र/ प्रत्येक का मूल्य रू.10/)
अग्निहोत्र लैमिनेटेड फोल्डर मूल्य रू.10 ब्रह्म यज्ञ (संध्या) लैमिनेटेड फोल्डर रू. 6
महिला क्रांति गीत ..... मूल्य रू. 80
रंग बदलती दुनिया ..... मूल्य रू. 50
योग यौवन और प्रकृति पर्यावरण .. रू. 100
चतुर्वेद भाष्य .....संस्कार विधि
मनु स्मृति .....गौ करुणानिधि
यज्ञ और पर्यावरण .....बंदा बैरागी
दयानंद सप्तक
हिंदी के प्रचार प्रसार में आर्य समाज की भूमिका
रामायण का वास्तविक स्वरूप
यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद
(कवि वीरेंद्र राजपूत कृत काव्यार्थ)
लाला लाजपत राय समग्र
स्वामी श्रद्धानंद समग्र
जन जागरण भाग 2 ..... मूल्य रू. 70

आदि सहित आर्यावर्त प्रकाशन एवं देश के प्रमुख प्रकाशनों के साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। समस्त साहित्य पर विशेष छूट उपलब्ध है कृपया आज ही साहित्य खरीदें और पाएं विशेष छूट।

संपर्क सूत्र : 94121 39333, 87552 68578

भजनोपदेशक पं. ओमप्रकाश वर्मा के जीवन का कश्मीर में प्रचार विषयक एक रोचक प्रसंग

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

पं. ओमप्रकाश वर्मा आर्यसमाज की पिछली कुछ पीढ़ियों से परिचित एकमात्र ऐसे आयोर्पदेशक थे जिन्हें आर्यसमाज के वरिष्ठ संन्यासियों, भजनोपदेशकों, आर्यविद्वानों के साथ कार्य करने का अनुभव था। उनके स्मृति-संग्रह में आर्यसमाज के गौरव को बढ़ाने वाली अनेक ऐतिहासिक घटनायें हैं जिन्हें आर्यजन एवं इसके शीर्ष विद्वान भी उनसे लेखबद्ध करने का आग्रह करते रहे हैं। वर्मा जी ने अपने ऐसे अनेक संस्मरण पं. इन्द्रजित देव जी को लिखवायें थे। इन प्रेरक प्रसंगों की एक पुस्तक रोचक एवं प्रेरक संस्मरण वरिष्ठ भजनोपदेशक श्री ओम् पकाश जी वर्मा" प्रकाशित हो चुकी है

एक प्रसंग सन् 1956 से सम्बन्धित इस प्रकार है कि वर्मा जी उस वर्ष आर्यसमाज हजूरी बाग, श्रीनगर जम्मू-काश्मीर में वेद प्रचार-सप्ताह के सिलसिले में गये थे। इस कार्यक्रम में उनके अतिरिक्त पं. शिव कुमार शास्त्री, पं. प्रकाशवीर शास्त्री, प्रिंसिपल पं. लक्ष्मीदत्त दीक्षित (स्वामी विद्यानन्द सरस्वती) तथा लाला रामगोपाल शालवाले भी पधारे थे।

एक दिन आर्यसमाज मन्दिर में वर्मा जी के कार्यक्रम के समय पर ब्रिग्रेडियर राजेन्द्र सिंह भी श्रोताओं में विराजमान थे। वर्मा जी के भजन, गीत तथा विचार सुनकर वे बोले कि कल जन्माष्टमी का त्यौहार है तथा यहां के सैनिक मन्दिर में यह त्यौहार मनाया जायेगा। क्या कल वहां यही भजन, गीत व विचार उनके सैनिकों को भी सायं 7.00 बजे सुनायेंगे? वर्मा जी ने उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। बिग्रेडियर राजेन्द्र सिंह जी अगले दिन आये तथा वर्मा जी को सेना के मन्दिर में अपनी गाड़ी में बिठाकर ले गये। यह मन्दिर कश्मीर नरेश के पुत्र डा. कर्णसिंह की कोठी के पास ही था। वर्मा जी ने वहां योगेश्वर कृष्ण जी के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों के आधार पर गीत, भजन व विचार प्रस्तुत किये। वर्मा जी के कार्यक्रम को सुनकर सैनिकों व उनके उच्चाधिकारियों में अद्भुत उत्साह का संचार हुआ। वापसी के लिये वर्मा जी जब ब्रिगेडियर साहब की गाड़ी के भीतर बैठे ही थे कि 2 व्यक्ति सामने वाली सड़क से उनके पास आए तथा बोले क्या पं. ओम प्रकाश वर्मा आप ही हैं? वर्मा जी ने उत्तर दिया कि हां, मैं ही ओमप्रकाश वर्मा हूं। तब बख्शी गुलाम मुहम्मद वहां के मुख्यमंत्री थे। वर्मा जी थोड़े समय के लिये चिन्तित हुए व स्मरण करने लगे कि उन्होंने इस्लाम व मुसलमानों के विरोध में क्या कहा है? ऐसा उन्होंने कुछ भी नहीं कहा था। फिर तुरन्त उनके मन में विचार आया कि जब ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह मेरे साथ हैं तो चिन्ता किस बात की करनी है?

वर्मा जी जीप से नीचे उतर गये तथा उन 2 व्यक्तियों से उनका परिचय पूछा? उनमें से एक व्यक्ति ने उत्तर दिया कि वह यहां के राज्यपाल डा. कर्णसिंह के मामा ओकार सिंह हैं। वर्मा जी ने पूछा मेरे योग्य सेवा बताइए।

उन्होंने कहा कि यहां आपने जो विचार सुनाए हैं, हमने सड़क पार उस कोठी में बैठकर पूरी तरह सुने हैं। क्या आप यही विचार वहां आकर भी सुनाएंगे?

ठीक है, मैं कल सायं 7.00 बजे आर्यसमाज हजूरीबाग में मिलूंगा। आप मुझे कल वहां से लेकर आने की व्यवस्था कीजिये तो मैं आ जाऊंगा।

उन्होंने कहा कि वह कल उन्हें वहां से ले जाएंगे। आर्यसमाज मन्दिर लौटकर वर्मा जी ने पूरा वृतान्त आर्यसमाज के अपने साथी विद्वानों को सुनाया जो वहां उनके साथ पधारे हुए थे। वह सभी विद्वान वर्मा जी के इन बातों को सुन कर बहुत प्रसन्न हुए। उन विद्वानों ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के तीन ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका डा. कर्णसिंह को भेंट करना तथा अपने उपदेश में महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज तथा आर्यसमाज का नाम अवश्य लेना।

डा. कर्ण सिंह की माताजी के नाम पर बने तारादेवी निकेतन में तब डा. कर्णसिंह जी सपरिवार रहते थे। उन दिनों वे जम्मू व कश्मीर के राज्यपाल थे। वह शासकीय बंगले में न रहकर तारादेवी निकेतन में ही रहते थे।

इसके आगामी दिन वर्मा जी जब निश्चित कार्यक्रमानुसार वहां पहुंचें तो वहां एक श्वेत वस्त्रधारी महानुभाव को भी उन्होंने देखा। उसने वर्मा जी ने पूछा आपका परिचय? वर्मा जी ने कहा कि मैं आर्यसमाज का एक उपदेशक-प्रचारक ओमप्रकाश वर्मा हूं। उन्होंने पूछा कि आजकल आर्यसमाज क्या कर रहा है? वर्मा जी ने बताया कि आजकल आर्यसमाज हिन्दी रक्षा आन्दोलन चलाने की तैयारी कर रहा है। वर्मा जी ने उनसे उनका परिचय भी पूछा। उन्होंने कहा कि लोग मुझे जनरल करिअप्पा कहते हैं। वर्मा जी प्रसन्न होकर बोले वाह! आप तो हमारे रक्षक सेनापति है। डा. कर्णसिंह ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि आजकल आर्यसमाज की गतिविधियां तो हम पढ़ते रहते हैं परन्तु यह बताइए कि आर्यसमाज को स्थापित हुये लगभग अस्सी वर्ष बीत गये हैं, इन वर्षों में आर्यसमाज ने क्या किया है? वर्मा जी

बोले आप जैसे राजाओं को ईसाई बनने से बचाया है। यह शब्द वर्मा जी ने सहज व निडर होकर कहे। कर्णसिंह जी बोले क्यों गलत बोलते हो, हमें आर्यसमाज ने ईसाई होने से बचाया है? नहीं, हम यह कदापि नहीं मान सकते।

पं. ओम प्रकाश वर्मा जी ने कहा कि आपको नहीं, आपके दादा महाराज प्रताप सिंह को ईसाई बनने से बचाया है। यदि वे तब ईसाई बन गये होते तो आज आप भी ईसाई होते। कर्ण सिंह जी ने पूछा कि आप कैसे कहते हैं कि मेरे दादा जी को ईसाई बनने से आर्यसमाज ने बचाया? वर्मा जी ने कहा सुनिए, डा. साहब! आपके दादा प्रताप सिंह के शासनकाल तक जम्मू-कश्मीर में पौराणिक पंडितों के दबाव के कारण आर्यसमाज पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा हुआ था। आर्यसमाज इसे कैसे सहन कर सकता था।

सन् 1892 में राजस्थान के पं. गणपति शर्मा लाहौर स्यालकोट के मार्ग से जम्मू में पहुंच गये। जम्मू से वह श्रीनगर आये। श्रीनगर से 23 किमी. दूर स्थित नीचे एक हाऊस बोट में वह रहने लगे। उन्हीं दिनों पादरी जानसन श्रीनगर में पहुंचा व महाराजा प्रताप सिंह से कहने लगा कि अपने पण्डितों से मेरा शास्त्रार्थ कराओ। यदि मैं शास्त्रार्थ में पराजित हो गया तो आपका धर्म स्वीकार करूंगा तथा आपके पण्डित यदि हार गये तो आपको ईसाई बनना होगा।

निश्चित तिथि पर राज-दरबार में शास्त्रार्थ हुआ। विषय था मूर्तिपूजा। भगवान की मूर्ति बन ही नहीं सकती क्योंकि उसकी कोई आकृति ही नहीं है। मूर्ति को भगवान मानकर इसकी पूजा करनी चाहिये, इसे सिद्ध करें। कई दिनों तक पण्डित इसे सिद्ध न कर सके। महाराजा अपने पण्डितों का पक्ष कमजोर पड़ता देखकर बपतिस्मा पढ़कर ईसाई बनने को तैयार हो रहे थे कि तभी पं. गणपति शर्मा, जो बहुत देर से सभा में बैठे थे, खड़े हो गये व महाराज प्रतापसिंह को सम्बोधित करके बोले। महाराज! मुझे आज्ञा दें तो मैं जानसन से शास्त्रार्थ करूंगा।

महाराज की पराजय हो रही थी। उन्होंने आज्ञा दे दी परन्तु पराजित पण्डितों व पादरी जानसन ने यह कहकर पं. गणपति जी का विरोध किया कि यह तो आर्यसमाजी पण्डित है। महाराज ने यह सोचकर कि यह जानसन को तो ठीक कर ही देगा, पण्डितों व जानसन की आपत्तियां निरस्त कर दीं व पंडित गणपति शर्मा जी को जानसन से शास्त्रार्थ करने को कहा। पं. गणपति जी बोले, पादरी जी। आप प्रश्न करें, मैं उत्तर दूंगा। जानसन बोले, हम आपसे शास्त्रार्थ करेंगे। पंण्डित गणपति शर्मा ने उन्हें कहा कि पहले यह बताएं कि शास्त्रार्थ शब्द का अर्थ क्या है? क्या शास्त्र से मतलब आपका छः शास्त्रों, योग, सांख्य, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त तथा मीमांसा से है? यदि इनसे ही आपका मतलब है तो बताइये कि इन दर्शन शास्त्रों में से किस का अर्थ करने आप यहां आए हैं? क्या आपको ज्ञान है कि अर्थ शब्द अनेकार्थक है। अर्थ का एक अर्थ धन होता है। दूसरा अर्थ प्रयोजन होता है जबकि तीसरा अर्थ द्रव्य, गुण व कर्म (वैशेषिक दर्शनानुसार) भी है। आप कौन-सा अर्थ समझने-समझाने आये हैं? शास्त्र भी केवल छः नहीं हैं। धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र व नीतिशास्त्र आदि कई शास्त्र विषयों की दृष्टि से भी हैं। आप शास्त्रार्थ शब्द का अर्थ समझायेंगे तो हम आगे बात चलायेंगे।

जानसन ने गड़बड़ायी वाणी में उत्तर दिया कि हम इसका उत्तर न दे सकेंगे। इस पर प्रतापसिंह जी ने सिर हिलाकर कहा अब काहे को उत्तर आयेगा। तब पं. जी ने फिर कहा, महाराज! जानसन उत्तर नहीं दे रहा है।

इस पर प्रतापसिंह जी बोले, पण्डित जी! यह तो आप पहले ही प्रश्न का उत्तर नहीं दे पा रहा है व मौन खड़ा है तो अब जाये यह अपने घर। पण्डित जी! आपने मुझे ही नहीं, पूरे जम्मू-कश्मीर की प्रतिष्ठा बचाई है। पूरे जम्मू-कश्मीर को ईसाई होने से बचाया है। हम आपसे बहुत प्रसन्न हैं। बताईये, आपको क्या भेंट दूं?

महाराज! मुझे अपने लिये कुछ नहीं चाहिये। देना ही है तो दो काम कीजिये। प्रथम तो यह कि आर्यसमाज पर लगा प्रतिबन्ध हटा दें तथा दूसरा यह काम करें कि यहां आर्यसमाज को स्थापना हो जाये।

वर्मा जी ने यह घटना डा. कर्णसिंह को पूरी सुनाई और उन्हें यह भी बताया कि श्रीनगर में हजूरी बाग का आर्यसमाज मन्दिर आपके दादा प्रतापसिंह जी द्वारा दी भूमि पर ही स्थापित हुआ था। प्रतापसिंह जी ने आर्यसमाज पर अपने पिता रणवीर सिंह द्वारा पौराणिक पण्डितों के दबाव व धमकियों के कारण लगाए प्रतिबन्धों को तुरन्त हटा दिया था।

श्री ओमप्रकाश वर्मा जी की बातें सुनकर डा. कर्णसिंह मौन हो गये। वर्मा जी ने उन्हें बताया कि यह घटना पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित आर्यसमाज का इतिहास प्रथम भाग में पृष्ठ 254 पर संक्षेप में वर्णित हैं। बाद में डा. कर्णसिंह के घर पर वर्मा जी के भजन, गीत व उपदेश हुये तथा उनकी गाड़ी उन्हें हजूरी बाग आर्यसमाज मन्दिर, श्रीनगर में वापिस छोड़ गई। वर्मा जी ने आर्यसमाज में उनके साथ पधारे पं. शिवकुमार शास्त्री आदि चारों उपदेशकों को उक्त पूरी घटना विस्तारपूर्वक सुनाई तो वे सभी बहुत प्रसन्न हुये और उन्होंने वर्मा जी को बहुत शाबाशी दी।

मनमोहन कुमार आर्य

वृक्ष धरा के आभूषण हैं...

आओ, अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दें!

वृक्ष असंख्य आयामों में प्रकृति की समस्त इकाइयों के संग सहयोगी और पूरक होते हैं।वृक्ष प्राण वायु तो प्रदान करते ही हैं, साथ ही हानिकारक कॉर्बन डाई ऑक्साइड को सोख लेते हैं। इससे वातावरण में सन्तुलन बना रहता है। वृक्ष वर्षा चक्र एवम् ऋतु चक्र को व्यवस्थित बनाए रखने में भी महत्व पूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। ये पशु पक्षियों को आश्रय देते हैं तथा धरती को उर्वरा बनाते हैं। वृक्ष छाया ही नहीं, फल भी देते हैं। जो वृक्ष फल नहीं देते, वो वातावरण को शुद्ध बनाए रखने में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। प्रकृति में विद्यमान सभी इकाइयां परस्परता में, निरन्तर संगीतमयता में अपने कर्तव्य और दायित्व का निर्वहन करते हुए, विकास दर विकास की निरन्तरता को बनाए रखती हैं। प्रकृति में विद्यमान समस्त इकाइयां सभी इकाइयों का पोषण करने और कराने में निरन्तर सहयोगी होती हैं। प्रकृति में विद्यमान समस्त इकाइयां प्रयोजन सहित हैं।

आओ! हम आज ही अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का संकल्प लें और पर्यावरण संरक्षण में अपना महती योगदान दें।

आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (रजिस्टर्ड), अमरोहा
(मो. 8630822099, 9412139333)

ईश्वर पाप को क्षमा नहीं करता तो फिर स्तुति व प्रार्थना किस लिए ?

(आर्यावर्त केसरी समाचार)

समाधान

"अव नो वृजिना शिशीह्यूचा वनेमानृचः ।
नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे ।।"

(ऋग्वेद १०/१०५/८)

इस वेद मन्त्र में हम ईश्वर से मात्र यह प्रार्थना कर रहे हैं कि हमारे पापों को हमसे दूर करिये, इसका अर्थ यह नहीं कि ईश्वर हमारे पापों को क्षमा कर देगा` यदि पाप क्षमा हो जाये, तो ईश्वर न्यायकारी कैसे हुआ ?

इस प्रकार व्यक्ति पाप करता जायेगा और ईश्वर से क्षमा मांगता जायेगा, फिर यह उस व्यक्ति का स्वभाव बन जायेगा ।

मनुष्य आत्मनिरीक्षण और आत्म नियंत्रण से शुद्ध और प्रकाशित हो जाता है । ऐसा मनुष्य इतनी शक्ति को प्राप्त करता है कि पापों से दूर हो जाता है।

वेद ने संकेत किया है कि आप (ईश्वर) सदैव हमारे कुकर्मों को छुड़ाकर हमारी सहायता करें एवं हम पाप से बचे रहें। प्राणी जगत का रक्षक, प्रकृष्ट ज्ञान वाला प्रभु हमें पाप से छुड़ाये ।

(अथर्व० ४/२३/१)

हे सर्वव्यापक प्रभु ! जैसे मनुष्य नौका द्वारा नदी को पार कर जाते हैं, वैसे ही आप हमें द्वेष रुपी नदी से पार करा दीजिये । हमारा पाप हमसे पृथक होकर दग्ध हो जाये ।

(अथर्व० ४/३३/७)

हे ज्ञानस्वरूप प्रभु ! आप हमारे अज्ञान को दूर रख पाप को दूर करों ।

(ऋ० ४/११/६)

"ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥"

(ऋग्वेद १/१८९/१)

हे ज्योतिर्मय परमेश्वर ! मुझे सुपथ पर ले चलो, मैं सन्मार्ग पर चलते-चलते ही धन और ऐश्वर्य का स्वामी बनूं और मुझे उन्हीं मार्गों पर चलाना ।

ईश्वर प्रदत्त मार्ग पर चलते हुए पाप कर्मों से दूर रहना है ।

इस प्रकार ईश्वर द्वारा हमारा पाप क्षमा नहीं करने पर भी वह स्तुत्य है।

ईश्वर भक्ति

जिन साधनों से ईश्वर का साक्षात्कार होता है, उसे भक्ति कहते हैं । भक्ति के तीन भाग हैं :--

स्तुति, प्रार्थना, उपासना ।

स्तुति - स्तुति का अर्थ है - ईश्वर के गुणगान करना,

उसके गुणों का चिन्तन करना और अपने जीवन में उन गुणों का धारण कर उनसे लाभ उठाना । मनुष्य का यह स्वाभाविक गुण है कि वह प्रत्येक वस्तु के गुणों को जानना चाहता है, छोटा बच्चा भी जब किसी वस्तु को देखता है तो पूछता है कि यह क्या है, ऐसा क्यों है, इसका नाम क्या है ? इत्यादि ।

प्रार्थना - प्रार्थना का अर्थ है, किसी वस्तु के गुण जानने के पश्चात उस वस्तु को पाने की प्रबल इच्छा का उत्पन्न हो जाना । ईश्वर से कुछ माँगने का नाम प्रार्थना है । यह तीन प्रकार की है :--

क) उत्तम प्रार्थना :

जिससे संसार के प्राणीमात्र का भला हो ऐसी प्रार्थना करना उत्तम प्रार्थना है ।

दृष्टव्य,

निस्सन्तान सन्तान युक्त हो,
सन्तान वाले पुत्र पौत्रों से युक्त हो,
निर्धन धन-सम्पन्न हो,
तथा सब लोग शतायु हो,
समय-समय पर वर्षा हो,
पृथिवी हरे भरे अन्नों से सुशोभित हो,
सारा देश क्षोभ से रहित हो,
देश के सभी नागरिक ज्ञानी, विज्ञानी, विद्धान निर्भय होकर विचरें,
संसार के सब प्राणी सुखी हों,
और कोई भी दुःखी दृष्टिगोचर न हो ।

ख) मध्यम प्रार्थना :-

जिसमें आत्म-कल्याण और आत्महित की भावना हो`

दृष्टव्य,

मेरा जीवन शुद्ध और पवित्र हो, बल, बुद्धि, यश, तेज, सत्यता, उदारता आदि शुभ गुणों का मेरे जीवन में वास हो ।

मैं विषयों, व्यसनों, दुगुर्णों एवं मृत्यु से पृथक होकर मोक्षानन्द का लाभ करूं ।

ग) निकृष्ट प्रार्थना :-

जिसमें अपना स्वार्थ और अन्यों के बुरे की भावना भरी हो । दृष्टव्य,

मुझे धन, पशु, सन्तान, सुख की प्राप्ति हो जाये और मेरे शत्रु इन वस्तुओं से रहित होकर दुःख, दारिद्रय और रोगों को प्राप्त कर मौत के दर्शन करे । ऐसी प्रार्थना ईश्वर कभी स्वीकार नहीं करते।

उपासना - उपासना का अर्थ है ईश्वर के समीप बैठना, ईश्वर के गुणों को अपने में धारण कर-के उस जैसा बनने का प्रयत्न करना।

जीव किसी भी अवस्था में ब्रह्म नहीं हो सकता । हाँ, समाधि अवस्था में कुछ समय के लिए वह अपने को ब्रह्म समान समझने लगता है। जैसे लोहा आग में पड़कर आग के समान हो जाता है । परन्तु आग नहीं बन जाता, आग से पृथक होने पर पुनः लोहा ही रहता है ।

-वैदिक विचार

सन्ध्या से दीर्घायु

(आर्यावर्त केसरी समाचार)

महर्षि मनु ने कहा है-

ऋषयो दीर्घ सन्ध्यत्वाद्
दीर्घमायुरवाप्नुयुः।
प्रज्ञां यशश्च कीर्तिं च
ब्रह्मवर्चसमेव च।।

(मनु० 9/94)

भावार्थ- ऋषियों ने दीर्घ जप करके अर्थात लम्बे समय तक सन्ध्या की, उसी के अनुसार दीर्घायु प्राप्त की, बुद्धि और यश प्राप्त किया और मरने के पश्चात अमर कीर्ति प्राप्त की, और दीर्घकालीन जप से ब्रह्मतेज भी प्राप्त किया।

गायत्री के जप करने का स्थान

अपां समापे नियतो नैत्यिकं
विधिमास्थितः।
सावित्रीमप्यधीयीत गत्वाऽरण्यं
समाहितः।।

भावार्थ- जङ्गल में अर्थात् एकान्त देश में सावधान होकर जल के समीप स्थित होकर नित्यकर्म को करता हुआ सावित्री अर्थात गायत्री मन्त्र का उच्चारण, अर्थज्ञान और उसके अनुसार अपने चाल चलन को करे, परन्तु यह जप मन से करना उत्तम है।

ओ३म् का स्मरण

ओं क्रतो स्मर (यजु० 40/15)
अर्थात् हे जीव! तू ओ३म् का स्मरण कर।

स्नान के पश्चात् सन्ध्या करके प्रभु का चिन्तन करना भी मनुष्य को अपनी दिनचर्या का एक मुख्य अंग बना लेना चाहिए। प्रभुझभक्ति आत्मिक भोजन तो है ही, किन्तु इससे शरीर भी स्वस्थ, बलवान और निरोग बनता है। उस सर्वशक्तिमान ईश्वर का एकाग्र चित्त होकर चिन्तन करने से साधक को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिकझशक्ति प्राप्त होगी, इसमें कुछ भी संदेह नहीं। ईश्वरझभक्ति के द्वारा जो मनुष्य को एक अलौकिक आनन्द और अद्भुत शक्ति प्राप्त होती है, उसका शरीर के ऊपर भी बहुत गहरा असर पड़ता है। शरीर की सब धातुओं उपधातुओं की विषमता दूर होकर उसमें समता व शक्ति का संचार होता है। संत महात्मा तथा योगी जनों के स्वस्थ, बलवान और दीर्घजीवी होने का ईश्वर भक्ति ही एक मुख्य कारण है। महाभारत में लिखा है- 'ऋषयः दीर्घसन्ध्यत्वाद् दीर्घमायुरवाप्नुयुः।' अर्थात ऋषियों ने दीर्घकाल तक सन्ध्या अर्थात ईश्वर भक्ति करने से ही दीर्घ (लम्बी) आयु को प्राप्त किया है।

संत कबीर ने भी 'मैं तो अपने प्रभु को रिझाऊं' अपने इस भजन में कहा है?

औषध खाऊं न बूटी खाऊं, न कोई वैद्य बुलाऊं।
एक ही वैद्य मिलो अविनाशी, वाही को नबज दिखाऊं।।

ईश्वर भक्ति जहाँ शारीरिक उन्नति के लिये आवश्यक है, वहाँ आत्मझकल्याण के लिए भी परम आवश्यक है। जिस प्रकार भोजन के बिना शरीर का काम नहीं चल सकता उसी प्रकार ईश्वरझभक्ति के बिना आत्मा का काम नहीं चलता। सच पूछा जाय तो शरीर के लिए भोजन इतना आवश्यक नहीं, जितना आत्मा के लिए ईश्वर भक्ति। इसीलिए ईश्वर भक्ति को आत्मिक खुराक कहा गया है। ईश्वर भक्ति से ही अज्ञान तिमिर का नाश होकर आत्मा में ज्ञानझज्योति का प्रकाश होता है। ईश्वर भक्ति के बल से ही मनुष्य संसार में अपनी सब शुभ कामनाएँ पूर्ण कर सकता है, अतः आत्मकल्याणाभिलाषी जनों को प्रतिदिन प्रभु का चिंतन अवश्य करना चाहिए। यदि हम प्रातः एक घण्टे तक एकाग्रचित्त होकर प्रभु की उपासना करें, एकमात्र प्रभु को छोड़कर दूसरा कोई भी विचार मन में न आने दें तो सब प्रकार की शारीरिक तथा मानसिक पीड़ाएँ केवल प्रभुझभक्ति से ही दूर हो-

विवेक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश अभ्यास भूमिका

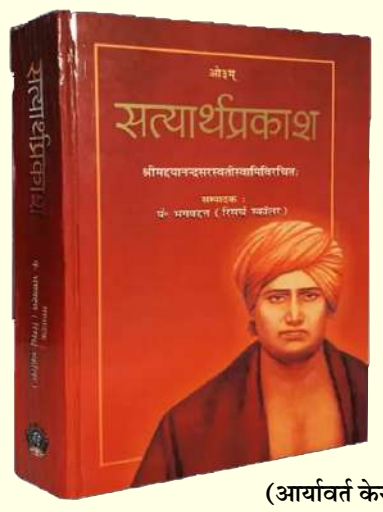

(आर्यावर्त केसरी समाचार)

प्र-1 सत्यार्थ प्रकाश में कितने समुल्लास है ?
उ सत्यार्थ प्रकाश में 14 समुल्लास है।
प्र सत्यार्थ प्रकाश के 6 समुल्लासों के विषय बताएं।
उ प्रथम - ईश्वर के नामों की व्याख्या द्वितीय - बाल शिक्षा
तृतीय - पठन-पाठन व्यवस्था
चतुर्थ- गृहस्थ आश्रम
पंचम वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम
छठा- राज धर्म
प्र 3 सत्यार्थ प्रकाश का मुख्य प्रयोजन क्या है?
उ सत्यार्थ प्रकाश का मुख्य प्रयोजन सत्य का प्रकाश करना है।
प्र 4मनुष्य असत्य की ओर क्यों झुक जाता है?
उ मनुष्य अविद्या, स्वार्थ हठ आदि के कारण असत्य की ओर झुक जाता है।
प्र 5 धर्म प्राप्ति के कार्य आरंभ में कैसे लगते हैं ?
उ धर्म प्राप्ति के कार्य आरंभ में विष के समान लगते हैं।
प्र 6 मनुष्य की उन्नति किससे होती है?
उ मनुष्य की उन्नति सत्य उपदेश से होती है।
प्र 7 मनुष्य किसे कहते हैं?
उ बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करने वाले को मनुष्य रहते हैं।
प्र 8 सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ कब लिखा गया था?
उ सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ भाद्रपद शुक्ल पक्ष 1939 संवत में लिखा गया था।
प्र 9 सत्यार्थ प्रकाश की रचना कहां हुई थी?
उ सत्यार्थ प्रकाश की रचना उदयपुर में हुई थी।
प्र 10 विद्वानों का मुख्य कार्य क्या है?
उ विद्वानों का मुख्य कार्य सत्य असत्य को बताना है।

काव्यांजलि

अनुपम कृति

अनुपम कृति नारियां ईश की
वेदों में भी वंदन है।
इन्हें पांव की जूती न समझो
ये माथे का चन्दन हैं।

अंतरिक्ष भी भेध सकें ये
जाने भू का जन जन हैं।
इन्हें पांव की-----

युद्ध में दे कर बलि पति की
करें नहीं ये क्रंदन हैं।
इन्हें पांव की-----,

यदि देती ये अग्नि परीक्षा
बन जाती फिर कुंदन हैं।
इन्हें पांव की-----

कर्तव्य को फैलें बांहें
कहें नहीं ये बंधन हैं।
इन्हें पांव की-----

ये खेलती अंगारों से
हम करते अभिनन्दन हैं।
इन्हें पांव की-----

देश धर्म की खातिर ये तो
तुच्छ कहें तन मन धन हैं।
इन्हें पांव की-----

इस माटी में उपजी हैं ये
कहती बस जन गण मन हैं।
इन्हें पांव की-----

जिस कुल की ये वंशज होती
कहते देहरी धन धन हैं।
इन्हें पांव की-----

नहीं चाहती हीरा माणिक
केवल विद्या ही धन हैं।
इन्हें पांव की-----

त्रेता युग की कौशल्या हैं
और पुत्र रघुनंदन हैं।
इन्हें पांव की----

ये भारत की पन्ना धाय
शीश झुका कर वंदन हैं।
इन्हें पांव की----

पुष्पा शर्मा
मोदीनगर

****

भजन-नामकरण

हुआ है नामकरण विस्तार,जी बधाई होवै ।
खुशियां हुई हैं बेशुमार, जी बधाई होवै ।।

जब तक कोई नाम नहीं है,तब तक पहचान नहीं है ।
नाम बिन हो कैसे निस्तार, जी बधाई होवै ।।1।।

सुई से पर्वत तक के,सबके हैं नाम रक्खे ।
नाम से वस्तु मिले बाजार,जी बधाई होवै ।।2।।

नाम कोई अच्छा होवै,लेने में सीधा होवै ।
होवै अर्थ युक्त उच्चार,जी बधाई होवै ।।3।।

बालक ये युग-युग जीवै,नाम भी सार्थक होवै ।
शतायु होवै सुखद अपार,जी बधाई होवै ।।4।।

ऐसे सुख निश दिन आवै,मिलके सब मंगल गावै ।
बना रहे "आचार्य सुफल" का प्यार, जी बधाई होवै ।।5।।

आचार्य सुफल (हांसी)
राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता चण्डीगढ़
मो.9416034759-9466472375

वैदिक धर्म में तलाक की भी जगह नहीं हैं

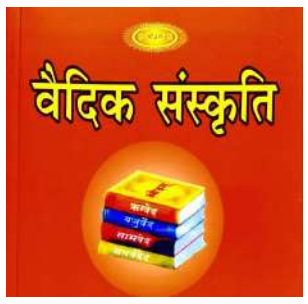

आर्यावर्त केसरी समाचार

वैदिक धर्म में तलाक की भी जगह नहीं हैं। वर-वधू को विवाह से पूर्व भली-भाँति देख-भाल और पड़ताल करके अपना साथी चुनने का आदेश दिया गया है - खूब अच्छी तरह परख कर अपना साथी चुनो। पर जब एक बार विवाह हो गया तो फिर विवाह टूट नहीं सकता - तलाक नहीं हो सकता। फिर तो एक दूसरे की कमी और दोषों को दूर करते हुए प्रेम और सहिष्णुता से गृहस्थ में रहो। एक पुरुष की एक ही पत्नी और एक स्त्री का एक ही पति होना चाहिये तथा विवाहित पति-पत्नी में कभी तलाक नहीं होना चाहिये इस विषय पर प्रकाश डालने वाले वेद के कुछ स्थल पाठकों के अवलोकनार्थ यहाँ उद्धृत किये जाते हैं अथर्ववेद (7.37.1) में पति से पत्नी कहती है - "हे पति तुम मेरे ही रहो, अन्य नारियों का कभी चिन्तन भी मत करो।"

अथर्ववेद (2.30.2) में पति पत्नी से कहता है - "हे पत्नी ! तू मुझे ही चाहने वाली हो, तू मुझ से कभी अलग न हो ।"

अथर्ववेद के चौदहवें काण्ड और ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 85 वें सूक्त में विवाह के समय नव वर-वधू को उपदेश दिया है कि - "तुम दोनों पति-पत्नी सारी आयु भर इस विवाहित जीवन के बन्धन में स्थिर रहो, तुम कभी एक दूसरे को मत छोड़ो।"

अथर्ववेद में वहीं चौदहवें काण्ड में (14.2.64) कहा है - "ये नव विवाहित पति-पत्नी सारी आयु भर एक दूसरे के साथ इस प्रकार इकट्ठे रहें जिस प्रकार चकवा और चकवी सदा इकट्ठे रहते हैं।"

ऋ ग व े द (10.85.47) में विवाह के समय वर-वधू अपने आप को पूर्ण रूप से एक-दूसरे में मिला देने का संकल्प करते हुए कहते हैं - "सब देवों ने हम दोनों के हृदयों को मिला कर इस प्रकार एक कर दिया है जिस प्रकार दो पात्रों के जल परस्पर मिला दिये जाने पर एक हो जाते हैं।

अथर्ववेद (14.1.50) में वर अपनी वधू को सम्बोधन कर के कहता है - "हे पत्नि ! तू मुझ पति के साथ बुढ़ापे तक चलने वाली हो।" "हे पत्नि ! तू मुझ पति के साथ सौ वर्ष तक जीवित रह।" (अथर्ववेद 14.1.52)

वेद के इन और ऐसे ही अन्य स्थलों में स्पष्ट रूप से प्रतिपादन किया गया है कि आदर्श स्थिति यह है कि एक स्त्री का एक पति और एक पुरुष की एक ही पत्नी रहनी चाहिये तथा उनमें कभी तलाक नहीं होना चाहिये।

विवाह वास्तव में वह दिव्य सम्बन्ध है जिस में दो व्यक्ति अपना हृदय एक-दूसरे को प्रदान कर देते हैं। हृदय एक ही बार और एक ही व्यक्ति को दिया जा सकता है। एक बार दिया हुआ हृदय फिर वापिस नहीं लिया जा सकता। इसीलिये वेद एक-पति और एक-पत्नी के व्रत का विधान करते हैं तथा तलाक का निषेध करते हैं। वेद की सम्मति में एक बार पति-पत्नी रूप में जिसका हाथ पकड़ लिया, जीवन भर उसी का हो कर रहना चाहिये। यदि एक-दूसरे में कोई दोष और त्रुटियां दीखने लगें तो उनसे खिन्न हो कर एक-दूसरे को छोड़ नहीं देना चाहिये। प्रत्युत स्नेह और सहानुभूति के साथ सहनशीलता की वृत्ति का परिचय देते हुए परस्पर के दोषों को सुधारने का प्रयत्न करते रहना चाहिये। जो दोष दूर ही न हो सकते हों उन के प्रति यह सोच कर कि दोष किस में नहीं होते, उपेक्षा की वृत्ति धारण कर लेनी चाहिये। स्नेह और सहानुभूति से एक-दूसरे की कमियों को देखने पर वे कमियां परस्पर के परित्याग का हेतु कभी नहीं बनेंगी। इसी अभिप्राय से वैदिक विवाह संस्कार में वर-वधू मिल कर मन्त्र-ब्राह्मण के वाक्यों से कुछ आहुतियां देते हैं जिन का भावार्थ इस प्रकार हैं - "तुम्हारी मांग में, तुम्हारी पलकों में, तुम्हारे रोमा आवर्तों में, तुम्हारे केशों में, देखने में, रोने में, तुम्हारे शील-स्वभाव में, बोलने में, हंसने में, रूप-काँति में, दाँतों में, हाथों और पैरों में, तुम्हारी जंघाओं में, पिंडलियों में, जोड़ों में, तुम्हारे सभी अङ्गों में कहीं भी जो कोई दोष, त्रुटि या बुराई है, मैं इस पूणार्हुति के साथ उन सब तुम्हारी त्रुटियों और दोषों को शान्त करता हूं।" विवाह संस्कार की समाप्ति पर ये वाक्य पढ़ कर आहुतियें दी जाती हैं। इन आहुतियों द्वारा वर-वधू यह संकल्प करते हैं कि हमने एक-दूसरे को उसके सारे गुण-दोषों के साथ ग्रहण किया है। हम एक-दूसरे के दोषों से खिन्न हो कर परस्पर झगड़ेंगे नहीं, और न ही कभी एक-दूसरे का परित्याग करने की सोचेंगे। हम तो विवाह-संस्कार की इन पूणार्हुतियों के साथ यह संकल्प दृढ़ करते हैं कि हम सदा परस्पर के दोषों को स्नेह और सहानुभूति से सुधारने और सहने का प्रयत्न करते रहेंगे। विवाह से पहले हमने अपने साथी को इसलिये चुना था कि वह हमें अपने लिये सब से अधिक उपयुक्त और गुणी प्रतीत हुआ था। अब विवाह के पश्चात हमारी मनोवृत्ति यह हो गई है कि क्योंकि मेरी पत्नी मेरी है और मेरा पति मेरा है, इसलिये मेरे लिये मेरी पत्नी सब से अधिक गुणवती है और मेरा पति मेरे लिये सब से अधिक गुणवान्‌ है। अब हमारे हृदय मिल कर एक हो गये हैं। अब हमें एक-दूसरे के गुण ही दीखते हैं, अवगुण दीखते ही नहीं। और यदि कभी किसी को किसी में कोई दोष दीख भी जाता है तो उसे स्नेह और सहानुभूति से सह लिया जाता है तथा सुधारने का यत्न किया जाता है। विवाह की इन पूणार्हुतियों में हमने ऐसा संकल्प दृढ़ कर लिया है और अपनी मनोवृत्ति ऐसी बना ली है। जब हमारे दिल और आत्मा एक हो गये हैं तो हमारा ध्यान आपस की ऊपरी शारीरिक त्रुटियों की ओर जा ही कैसे सकता है ?

इस प्रकार वैदिक धर्म में न तो अनेक-पत्नी प्रथा का स्थान है और न ही अनेक-पति प्रथा का। इसके साथ वैदिक धर्म में तलाक का भी विधान नहीं है। यह ऊपर दिये गये वेद के प्रमाणों से अत्यंत स्पष्ट है।

- आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

[स्रोत : मेरा धर्म, प्रथम संस्करण 1957 ई., पृ 15-18, प्रस्तुतकर्ता : भावेश मेरजा]

मै दवा बेचने वाला हूं

कुछ ऐसी दवाएं भी होती हैं, जिनके उपयोग से बीमारियां नहीं होती हैं।

1. कसरत भी एक दवाई है
2. सुबह-शाम घूमना भी एक दवाई है
3. व्रत रखना भी एक दवाई है
4. परिवार के साथ भोजन करना भी एक दवाई है
5. हँसी मज़ाक़ करना भी एक दवाई है
6. गहरी नींद भी एक दवाई है
7. अपनों के संग वक़्त बिताना भी एक दवाई है
8. ख़ुश रहना भी एक दवाई है
9. कुछ मामलों में चुप रहना भी एक दवाई है
10. लोगों का सहयोग करना भी एक दवाई है
11. और एक अच्छा दोस्त तो पूरी की पूरी दवाई की दुकान है।

नोट – मैं दवाई बताने की फ़ीस नहीं लेता, आपकी ख़ुशी ही मेरी फ़ीस है।

प्रस्तुति :इंजीनियर सुरेश अग्रवाल, नोएडा

वैदिक शिक्षा

बच्चों को स्मरण कराने योग्य वाक्य

1-आयुर्यज्ञेन कल्पताम् । यजुर्वेद १८.२९
हमारी आयु यज्ञ से समर्थ हो - पुष्ट हो ।

2- प्राणो यज्ञेन कल्पताम्।
हमारे प्राण यज्ञ से समर्थ हों।

3-चक्षुर्यज्ञेन कल्पताम्।
हमारे नेत्र यज्ञ से समर्थ हों।

4-श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताम्।
हमारे कान यज्ञ से समर्थ हों।

5-वाक्यज्ञेन कल्पताम्।
हमारी वाणी यज्ञ से समर्थ हो।

6-मनो यज्ञेन कल्पताम्।
हमारा मन यज्ञ से समर्थ हो।

7-आत्मा यज्ञेन कल्पताम्।
आत्मा यज्ञ से समर्थ हो।

8-ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताम्।
चारों वेदों का ज्ञाता यज्ञ से समर्थ हो।

9-ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताम्।
सूर्य ज्योति यज्ञ से समर्थ हो।

10-स्वर्यज्ञेन कल्पताम्।
सुख यज्ञ से समर्थ हो।

11-पृष्ठं यज्ञेन कल्पताम्।
पृथ्वी आदि लोकों का आधार यज्ञ से समर्थ हो।

12-यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।
सारे अच्छे कार्य यज्ञ से समर्थ हों। अर्थात् यज्ञ के अनुष्ठान से ये सब पुष्टि और शक्ति को प्राप्त होते हैं।

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती

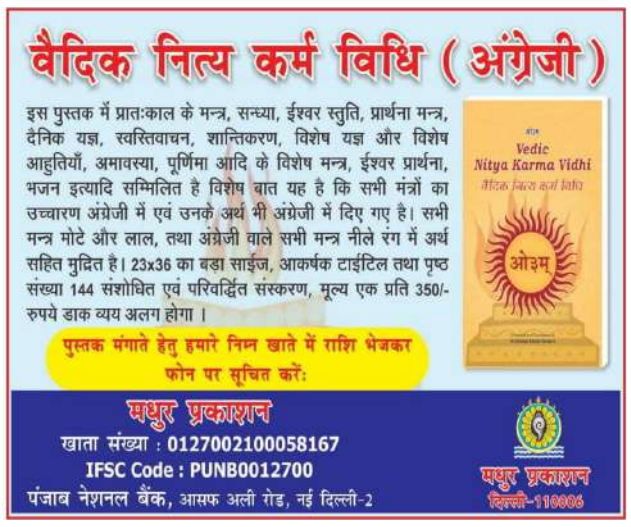

दृष्टि और दृष्टिकोण में अंतर

आर्यावर्त केसरी समाचार

दृष्टि और दृष्टिकोण दोनों में बहुत अंतर है। दृष्टि का अर्थ है, आंख से देखने की शक्ति। जो व्यक्ति अपनी आंख से देखता है, और उसे ठीक दिखाई देता है, तो कहा जाता है कि "इसकी दृष्टि ठीक है।" तब सामने का दृश्य ठीक दिखेगा। जैसा है वैसा दिखेगा। ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक है।

"यदि दृष्टि में खराबी है, आंख में कोई रोग है, तो सामने का दृश्य ठीक नहीं दिखेगा।" ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं, जिनकी दृष्टि खराब है, अर्थात वे आंख के रोगी हैं, जो ठीक प्रकार से देख नहीं पाते। उनकी आंखें कमजोर हैं। "और जिनकी दोनों आंखें फूट गई हैं, वे सूरदास हैं, संसार में ऐसे लोग तो और भी कम हैं।"

अधिकांश लोगों की दृष्टि ठीक है। आंखें ठीक हैं। सामने साफ साफ दिखता है। "इसलिए दृष्टि ठीक होने से वे भौतिक रूप से नहीं टकराते, दुर्घटना का शिकार नहीं होते। यह तो ठीक है।"

"परंतु दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है दृष्टिकोण। जो अधिकांश लोगों के पास ठीक नहीं है।" "बहुत से लोगों की दृष्टि तो ठीक होती है, परंतु उनका दृष्टिकोण ठीक नहीं होता। वे एक ही वस्तु को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखते हैं। जिस वस्तु को जिस दृष्टिकोण से देखना चाहिए, वैसा नहीं देखते।" वैसा ठीक-ठीक देखने वाले लोग बहुत कम हैं। "इसलिए जिनका दृष्टिकोण ठीक है, सृष्टि नियम के अनुसार है, वेदों के अनुकूल है, न्याय और सत्य के अनुकूल है, बस वही लोग संसार में सुखी हैं।"

"बाकी तो जिनका दृष्टिकोण गलत है, वे हर वस्तु को हर बात को अपने मनमाने ढंग से देखते हैं। संसार में अनेक भ्रांतियां फैलाते हैं, अनेक प्रकार के पाप कर्म करते हैं। और उसके फलस्वरूप भिन्न-भिन्न योनियों में अपने कर्मों का दंड भोगते हैं।" दृष्टिकोण गलत होने के कारण वे इतना भी समझ नहीं पाते, कि "हम जो कर रहे हैं वह गलत है। वह धर्म के विरुद्ध है। क्योंकि उनमें बहुत सी अविद्या राग द्वेष पक्षपात अन्याय आदि दोष होते हैं। इन कारणों से उनका दृष्टिकोण बिगड़ जाता है।"

ऐसे लोग न तो जीते जी स्वयं सुखी रहते, और न ही दूसरों को सुख से जीने देते। तो "ऐसे लोगों को अवश्य पहचानें, जिनका दृष्टिकोण ठीक नहीं है। ऐसे लोगों से सदा सावधान भी रहें तभी आप ठीक ढंग से जी पाएंगे। अन्यथा गलत दृष्टिकोण वाले लोग आपको ठीक ढंग से जीने नहीं देंगे। वे स्वयं तो दुखी रहेंगे ही, साथ साथ आपको भी दुखी करेंगे।"

"स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, निदेशक दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, गुजरात।"

आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.), अमरोहा

द्वारा प्रकाशित

आर्य समाज बुला रहा है

आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान
पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय (एम. ए.)

द्वारा आर्य समाज के मूलभूत सिद्धांतों व विविध आयामों पर लिखी गई एक अत्यंत प्रभावी लघु पुस्तिका
(घर-घर पंहुचाएं महर्षि कृत अमूल्य साहित्य)

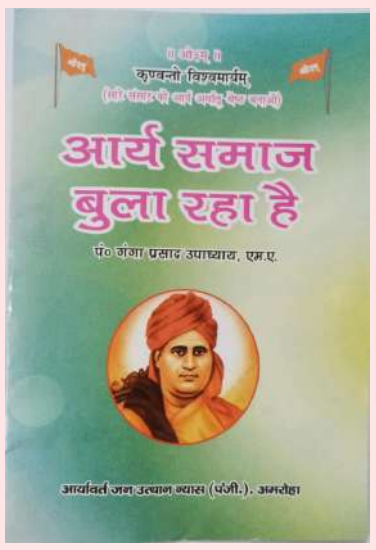

अतः आज ही मंगाएं अत्यंत आकर्षक कलेवर में सुंदर टाइटल के साथ प्रकाशित यह संग्रहणीय व पठनीय पुस्तिका

आर्य समाज के उत्सवों, यज्ञ समारोहों तथा पारिवारिक या सामाजिक अनुष्ठानों के शुभ अवसर पर सैकड़ो की संख्या में इस लघु पुस्तिका का वितरण कर जन जन तक पहुंचाएं आर्य समाज की विचारधारा और उसके 10 सार्वभौमिक नियमों का मर्म।

पृष्ठ-12 (23X36 के 16वां साइज)

मूल्य : 12/ प्रति पुस्तक।

अधिक संख्या में लेने पर आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.), अमरोहा के विशेष सौजन्य से दी जायेगी इस पुस्तक पर 50% की भारी छूट साथ ही, वितरक में नाम, पता, चित्र व परिचय प्रकाशन की भी है सुविधा।

अर्चना यज्ञ पद्धति

(महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ विधि सहित सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली द्वारा प्रमाणित यज्ञ की एक उत्कृष्ट पुस्तक)

(घर-घर पहुंचाएं यज्ञ की पुस्तक)

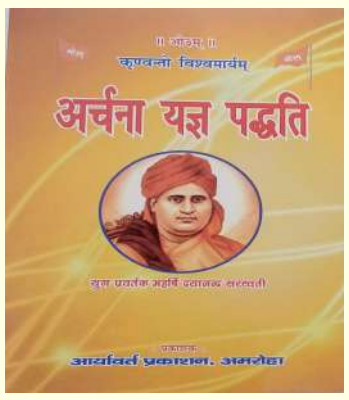

आर्य जनों की विशेष मांग पर साप्ताहिक सत्संगों, विशिष्ट बृहद यज्ञों एवं पारिवारिक तथा दैनिक यज्ञ की पुस्तक अर्चना यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) विगत 30 वर्षो से निरंतर प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में विशेष मंत्रों, प्रार्थनाओं तथा भजनों का भी समावेश किया गया है।

अत्यंत आकर्षक तथा सुंदर टाइटल के साथ उत्तम पेपर

पृष्ठ-40 (23X36 के 16वां साइज)

मूल्य : 20/ प्रति पुस्तक।

अधिक संख्या में लेने पर 40% की विशेष छूट तथा वितरक में नाम, पता, चित्र व परिचय प्रकाशन की भी सुविधा है।

पुस्तक लेने हेतु आज ही अपना ऑर्डर बुक कराएं।

शुभ अवसरों, विशेष अनुष्ठानों, उत्सवों तथा अपने प्रिय जनों की पुण्यस्मृति आदि के उपलक्ष्य में अधिक से अधिक संख्या में इस उपयोगी पुस्तक को वितरित कर श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ के प्रचार_प्रसार में सहयोगी व सहभागी बनें।

दयानंद लघुग्रंथ संग्रह (महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा रचित पांच लघु पुस्तकों_पंच महायज्ञ विधि, अर्योद्देश्यरत्नमाला, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु तथा आर्याभिविनय का एक अनूठा संग्रह)

(घर-घर पंहुचाएं महर्षि कृत अमूल्य साहित्य)

आर्य जगत की विशिष्ट विभूति, वैदिक साहित्य के प्रकांड विद्वान, उच्चकोटि के लेखक, प्रभावशाली वक्ता तथा आर्ष साहित्य के मर्मज्ञ **पूज्य स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती जी द्वारा संपादित** दयानंद लघुग्रंथ संग्रह का सर्वप्रथम प्रकाशन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, द्वारा दिल्ली में दिनांक 25 से 28 अक्टूबर 2012 को संपन्न अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के शुभ अवसर पर किया गया था। इसी का पुनर्प्रकाशन आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा महर्षि दयानंद के उत्कृष्ट साहित्य को जन-जन तक पहुंचने के उद्देश्य से फिर एक बार किया गया है। निश्चय ही, यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है। अतः आज ही मंगाएं अत्यंत आकर्षक कलेवर में सुंदर टाइटल के साथ प्रकाशित यह संग्रहणीय

पृष्ठ-212 (23X36 के 16वां साइज) मूल्य : 60/ प्रति पुस्तक।

अधिक संख्या में लेने पर आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.), अमरोहा के विशेष सौजन्य से इस पुस्तक पर 50% की भारी छूट दी जायेगी। साथ ही, वितरक में नाम, पता, चित्र व परिचय प्रकाशन की भी सुविधा है।

इस अनमोल ग्रन्थ को प्राप्त करने के लिए आज ही बुक कराएं अपना ऑर्डर।

शुभ अवसरों, विशेष अनुष्ठानों, उत्सवों तथा अपने प्रिय जनों की पुण्यस्मृति अथवा जन्म दिवस आदि के उपलक्ष्य में अधिक से अधिक संख्या में इस उपयोगी पुस्तक को वितरित कर आर्ष साहित्य के प्रचार_प्रसार में सहयोगी व सहभागी बनें।

।।ओ३म्।।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जन्म जयंती

तथा

आर्य समाज स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में घर-घर सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का लें संकल्प

घर-घर पहुंचाएं ऋषि दयानंद का कालजयी

अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा की सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार की पावन मुहिम से जुड़िए

व्यक्तिगत स्तर पर कम से कम 10 तथा आर्य समाज व संस्थान के स्तर पर कम से कम 100 सत्यार्थ प्रकाश वितरण का उठाएं बीड़ा

अपने प्रिय आत्मीय जनों की पुण्य स्मृति में अथवा जन्म दिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, आदि जैसे शुभ अवसरों, उत्सवों और अनुष्ठानों के पावन उपलक्ष्य में आज ही

सत्यार्थ प्रकाश पर पाइए भारी छूट

साइज 20X30 / 8 मोटा टाइप, पक्की जिल्द एवं उत्तम कागज

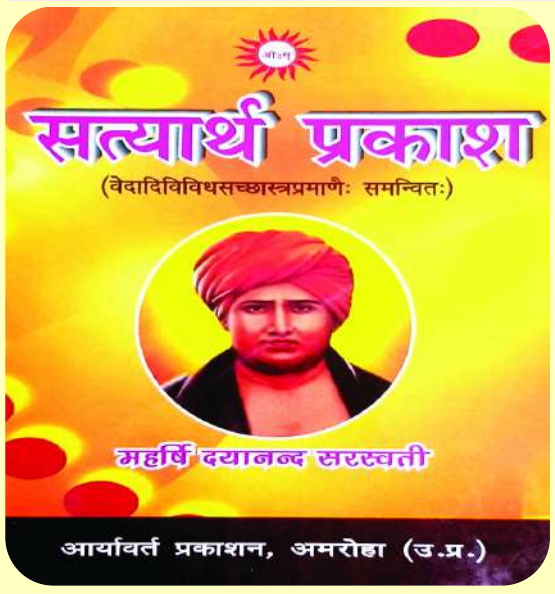

सत्यार्थ प्रकाश प्रेमोपहार के रूप में इसमें प्रकाशित होगा पूरा एक रंगीन पृष्ठ, जिस पर आप अपना, परिवार का अथवा किसी प्रिय जन का चित्र दे सकते हैं।

आज ही करें संपर्क : **डॉ. अशोक कुमार आर्य**
मो.94121 39333, 86308 22099 कार्यालय 87552 68578

तो फिर देर किस बात की ?

अभी उठाइए अपना फोन और मो. नं. 8630822099 अथवा 7017448224 पर बुक कराइए अपना ऑर्डर।

– : प्राप्ति स्थल :–

डॉ. अशोक कुमार आर्य, द्वारा आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.)

गोकुल बिहार, निकट श्रीराम पब्लिक इंटर कॉलेज, अमरोहा (उ0प्र0)-244221 (मो. 9412139333, 8630822099)

वार्षिक तथा आजीवन सम्मानित सदस्यों की सेवा में आवश्यक सूचना

आदरणीय महोदय/महोदया! सादर नमन, आशा है स्वस्थ एवं सानंद होंगे।

आपकी आर्यावर्त केसरी की वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि समाप्त हो चुकी है।

अतः अनुरोध है कि आगामी वर्ष (2023-24) के नवीनीकरण हेतु वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि रू0 100/- अथवा आजीवन सदस्यता सहयोग राशि (10 वर्षीय) रु. 1100/- निम्न बचत खाते (S.B. A/C) में जमा करने का कष्ट करें :

खाते का नाम : आर्यावर्त केसरी खाता संख्या : 30404724002 IFSC कोड : SBIN0000610

शाखा : भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा

कृपया उक्त खाते में अपनी सहयोग

राशि जमा करने के उपरांत मो. नं. 9412139333 अथवा 7017448224 पर अवगत कराने का कष्ट करें। उल्लेखनीय है कि समस्त आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र उनके जन्म - दिवस के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित आर्यावर्त केसरी में प्रतिवर्ष प्रकाशित किए जायेंगे।

सादर- सधन्यवाद शुभाकांक्षी-

कृते आर्यावर्त केसरी/ प्रभारी-प्रसार

मिशनरी भाव से सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए पुरोहित-प्रचारक, उपदेशक,भजनोपदेशक व आर्य वीर दल प्रशिक्षक एवं योगा टीचर बनने के इच्छुक युवक / युवतियां विश्व शतिविश्व शान्ति गायत्री मिशन (ट्रस्ट) रजिस्टर्ड चण्डीगढ़ से शीघ्र सम्पर्क करें । इच्छुक युवक / युवतियों की योग्यता कम से कम दसवीं कक्षा पास अथवा उससे अधिक होनी चाहिए । अधिक योग्यता वाले को वरीयता प्रदान की जाएगी ।

सचिव / चेयरमैन - विश्व शान्ति गायत्री मिशन चण्डीगढ़

सम्पर्क सूत्र मोबाइल

9416034759, 9466472375, 9466850651, 9915595724

पुरोहित – प्रचारक एवं योगा टीचर बनने के इच्छुक युवक / युवतियां शीघ्र सम्पर्क करें

आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा भव्य कैलेण्डर प्रकाशन

यह है कैलेण्डर का प्रारूप साइज 19 गुणा 25 ईंच उत्तम क्वालिटी का आर्ट शीट पेपर
ऊपर तथा नीचे पत्ती युक्त लैमिनेटेड बहुरंगी छपाई का भव्य कैलेण्डर

वर्ष 2024 के अपने कैलेण्डरों का आदेश आज ही बुक करायें

इस स्थान पर आपका नाम पता एवं संस्थान/प्रतिष्ठान का विवरण या जो सामग्री आप देना चाहेंगे प्रकाशित की जाएगी।

प्रचारार्थ मूल्य 1350 रूपये सैंकड़ा वितरक में नाम तथा पते के प्रकाशन की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध है कृपया अपना प्रकाशन आदेश निम्न चलित भाष पर अंकित कराने का कष्ट करें 9412139333, 8755268578 अपनी धनराशि 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC Code : SBIN0000610) में आदेश से पूर्व या आदेश की आपूर्ति होने के बाद भी भेज सकते हैं धन्यवाद

- डॉ0 अशोक कुमार आर्य (सम्पादक)

कृपया अपना ऑर्डर आज ही बुक करायें तथा जन जन तक पहुँचाये 2025 का यह भव्य

डाक द्वारा भेजने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

सुंदर, सुशील, गृह कार्य मे दक्ष संस्कारित कन्या, कद 5ft. रंग- Fair जन्म-19/02/1991, शिक्षा- M.Com, PG Diploma in Accountancy (with computerized accounts &taxation), लखनऊ मे कार्यरत के लिए समकक्ष, संस्कारित युवक चाहिए। लखनऊ वासी को प्राथमिकता। सम्पर्क- 9975109603, 9984602766, 8318651664

****

लड़की जन्म 08-04-1988 ऊँचाई, 5'3'' रंग-गोरा श्याम वर्ण, शिक्षा एम.ए. (इंग्लिश) बी.एड. वर्तमान में चन्दा देवी इण्टर कालेज आगरा प्राइवेट स्कूल में पीजटी। मूल निवासी आगरा। गोत्र : कश्यप ब्राह्मण, सौम्य सुशील। सम्पर्क सूत्र : एस.पी. चटर्जी, प्लाट नं0 89, पुष्पांजलि, लक्ष्मी पैलेस, फेज-प्रथम, देवरी रोड बुंदू कत्र आगरा-282001 मो0 9149374841

वधू चाहिए

❐ उत्तर प्रदेश के जनपद बदायूँ निवासी प्रतिष्ठित आर्य परिवार के 27 वर्षीय युवक लम्बाई 57 योग्यता बी.एस सी., बी.एड. अच्छी आय , शुद्ध शाकाहारी, संस्कारवान कायस्थ वर्णस्थ युवक हेतु सुशिक्षित, सुन्दर, योग्य, गृहकार्य में दक्ष, संस्कारवान, सुसंस्कृत आर्य परिवार की कन्या चाहिए । आर्य समाजी होने पर जाति बंधन नहीं ।

संपर्क सूत्र : 9997386782

****

❐ लखनऊ निवासी प्रतिष्ठित संस्कारवान परिवार के तलाकशुदा 49 वर्षीय युवक, लंबाई 5 3 , शैक्षिक योग्यता बी.ए., एम.ए., अच्छी आय, शुद्ध शाकाहारी , कान्यकुब्ज ब्राह्मण हेतु सुंदर, सुशील, सुयोग्य, सुशिक्षित तथा गृह कार्य में दक्ष अविवाहित, विधवा अथवा तलाकशुदा वधु चाहिए। संपर्क सूत्र : 8755701393

वधू चाहिए

❐ बरोग व्यू हॉस्पिटल रोड, सोलन (हिमाचल प्रदेश) निवासी सम्मानित ऑटोमोबाइल्स, मेडिकल, व प्ले स्कूल आदि व्यवसायों से सुसम्पन्न गोयल (वैश्य) परिवार के सदस्य, (मामा जी गुरुग्राम हरियाणा से विधायक), निजी प्रतिष्ठित व्यवसायिक संस्थान के स्वामी, 31 वर्षीय युवक, लंबाई 5 8 , शैक्षिक योग्यता बी.बी.ए., एम.बी.ए., शुद्ध शाकाहारी, संस्कारवान हेतु सुंदर, सुशील, सुयोग्य एवम् सुशिक्षित वधु चाहिए। दहेज व जाति बंधन नहीं।

-संपर्क सूत्र : 8360658863, 9816852002

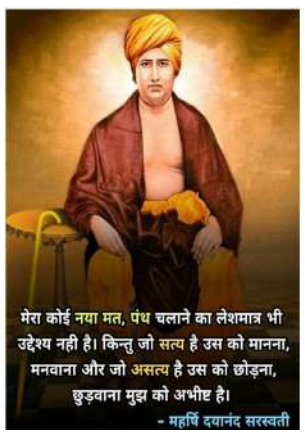

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. बीना 'आर्या'
साहित्य सम्पादक
बृजेन्द्र सिंह 'वत्स'
सह सम्पादक :
पं. चन्द्रपाल 'यात्री' डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान
टंकण - विकास अग्रवाल/इशरत अली
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य
मो0 9412139333

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) द्वारा आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0 प्र0) से मुद्रित व कार्यालय आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ0 प्र0) से प्रकाशित एवं प्रसारित। सम्पादक- डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी, मो0- 9412139333
E-mail : aryawartkesari@gmail.com